RNI No. 7127/60 डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 61 अंक : 02 प्रकाशन तिथि : 25 जनवरी कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 फरवरी, 2024

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

पूज्य श्री तनसिंह जी

जैसे रखोगे वैसे खुश ही रहेंगे
जमाने को कौम की रे कहानी कहेंगे

Printers Club
of India Limited

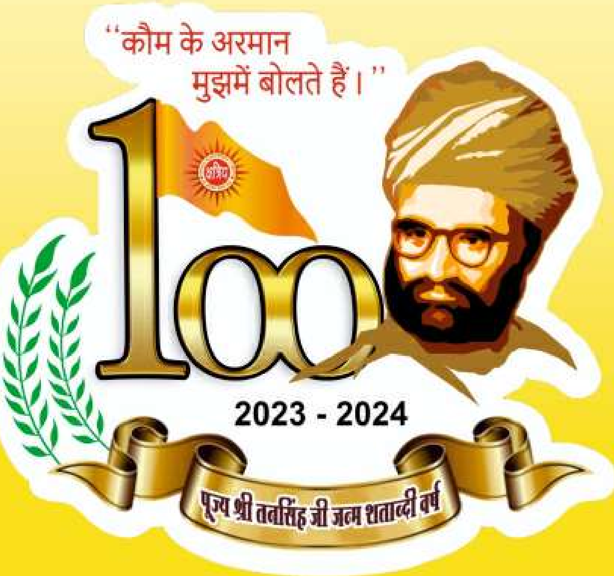

पूज्य श्री तनसिंह जी
जन्म शताब्दी समारोह
की हार्दिक शुभकामनाएं

57, RIICO Jhotwara Industrial Area, Jaipur-12

संघशक्ति

4 फरवरी, 2024

वर्ष : 61 अंक : 02

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

❍ प्रभात संदेश	✍ भगवान सिंह रोलसाहबसर	04
❍ समाचार संक्षेप	✍	05
❍ मैं निर्झर हूँ	✍ श्री गिरधारी सिंह डोभाड़ा	06
❍ प्रेरक पू. तनसिंह जी	✍ श्री छुट्टन सिंह, दाबड़दुम्बा	08
❍ श्री क्षत्रिय युवक संघ एक साधना मार्ग	✍ श्री चैनसिंह बैठवास	11
❍ एक मात्र मार्ग	✍ श्री मगसिंह लाठी	18
❍ पू. श्री तनसिंह जी कालखण्ड की.......	✍ कर्नल श्री हिम्मत सिंह	19
❍ बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास	✍ श्री खींवसिंह सुलताना	25
❍ महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	✍ श्री भँवर सिंह मांडासी	27
❍ आदर्श और अनूठे गाँव	✍ कर्नल श्री हिम्मत सिंह	31
❍ अपनी बात	✍	34

भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर-2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा 23.05.2023 को प्रदत्त प्रभात संदेश

''हीरो सो जनम गंवायो रे, भजन बिना बावरे।''

यह आप लोगों ने सुना होगा। रोज अपन यही बात करते हैं कि मनुष्य जीवन भगवान द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य निधि है। इससे अपने कल्याण का मार्ग ढूंढते हुए संसार के कल्याण में लगाना ही इस शरीर की उपयोगिता है, ऐसा कई दिनों से हम चर्चा कर रहे हैं। जिसने कहा- 'हीरो सो जनम गंवायो रे, भजन बिना बावरे' ये गहरी अनुभूति से, हृदय से, अंतःकरण से, नाभि से निकले हुए शब्द हैं। क्षत्रिय युवक संघ भली प्रकार समझकर इस भजन को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न कर रहा है। हमारी यह साधना जिस साध्य के लिए हम कर रहे हैं, वह तब तक पूरी नहीं हो सकती...बल्कि मैं कहूंगा.. प्रारंभ ही नहीं हो सकती जब तक हमारे मन में एक दृढ़ संकल्प न हो, एक प्रतिज्ञा न हो कि मैं जीवन भर यही काम करूंगा। और जो जीवन भर यही काम करेगा उसके लिए यही माला बन जाती है, यही पूजा बन जाती है, यही उपासना बन जाती है। यहाँ क्षत्रिय युवक संघ में जब हम आते हैं तो भगवान का सान्निध्य प्राप्त करते हैं। भगवान हमारे चारों तरफ विराजमान हैं। जो हमारे साथी हैं, जो हमारे घटनायक हैं, जो हमारे शिक्षक हैं, इतना ही नहीं हमारे सारे स्वयंसेवक भगवान के रूप हैं। इनमें किसी प्रकार की खामी नहीं है, यह एहसास हमको करना पड़ेगा। तब साधना में कोई बाधा नहीं आएगी। क्षत्रिय युवक संघ का प्रारंभ में बीज रूप में जो पौधा लगाया गया पूज्य तनसिंह जी द्वारा...वो धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा है। इसकी छाया में हम सब विराजमान हैं और हमको महसूस होता है कि यही पौधा, जो कभी लगाया गया था, अब वटवृक्ष बनता जा रहा है और हमको ही नहीं, सारे संसार को अपनी छाया देने वाला है। ऐसा विराट रूप है हमारे इस क्षत्रिय युवक संघ का। इसकी विराटता का दर्शन करना है, वो हमारी साधना से अंतःकरण में जो ताले लगे हुए हैं, वो हिलने लगते हैं, खड़कने लगते हैं, बिना चाबी के खुलने शुरू हो जाते हैं और जब हृदय कपाट जब खुलते हैं तब उस हृदय में विराजमान जो कोई है...उस परम सत्ता का दर्शन हम करते हैं। यही भजन है। भजन करके यह जो उपलब्ध किया जाना है, वो कहीं जंगल में जाकर के नहीं, अपने परिवार में रहते हुए, विद्याध्ययन करते हुए, नौकरी करते हुए, व्यापार करते हुए और जीवन के समस्त व्यापार करते हुए कभी हम इसको भूलें नहीं। यह बिना संकल्प के नहीं हो सकता। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपके हृदय के कपाट खुल जाएं, आपको भगवान के दर्शन हो जाएं। दर्शन होने से क्या लाभ होने वाला है? हम तो मुक्ति की भी कामना नहीं करते। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चार पुरुषार्थ बताए जाते हैं और अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। तो क्षत्रिय युवक संघ में आकर के हमने यह भी सीखा है कि हमको मोक्ष तक की कोई परवाह नहीं है। इस जीवन में जो हमारे जीवन का लक्ष्य है, स्वधर्म पालन, क्षात्रधर्म का पालन, यही मेरे लिए मोक्ष का मार्ग है। यह हमारी समझ में आ जाए, आज के मंगल प्रभात में क्षत्रिय युवक संघ की ओर से यही मंगल संदेश है। ●

समाचार संक्षेप

संघ स्थापना दिवस :

श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस 22 दिसम्बर को अनेक, स्थानों पर उत्साह पूर्वक मनाया गया। अहमदाबाद में आयोजित कार्यक्रम में संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह बेण्याकाबास ने कहा कि पूज्य तनसिंहजी के हृदय में एक व्यथा थी जो श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुई। पूज्य तनसिंह जी ने एक संकल्प लिया और उस संकल्प के आधार पर श्री क्षत्रिय युवक संघ को तैयार किया। वह व्यथा, वह पीड़ा जो तनसिंह जी की थी, वह लाखों लोगों की व्यथा और पीड़ा बन गई। यही पूज्य श्री का स्वप्न था और यही स्वप्न हमारा होना चाहिए कि जिस पीड़ा को हमने हृदय में स्थापित किया है, वह पीड़ा अन्य सभी की पीड़ा बन जाए। श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना यही कर रही है। जिस संस्था, संगठन अथवा व्यक्ति में त्याग का भाव जागृत होगा वही लम्बे काल तक प्रासंगिक बने रहने का आधार है।

इस कार्यक्रम में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र भाई पटेल भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि क्षात्रवृति और चरित्र निर्माण द्वारा सामाजिक उच्चादर्शों की स्थापना के लिये पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह चूड़ासमा, पूर्व गृह राज्य मंत्री श्री प्रदीप सिंह जाड़ेजा, गुजरात कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष श्री इन्द्रविजय सिंह गोहिल, भाजपा के पूर्व महामंत्री श्री प्रदीपसिंह बाघेला ने भी विचार व्यक्त किए। जागृति बा हरदासकाबास ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

सूरत में माननीय संघ प्रमुख श्री के सान्निध्य में स्थापना दिवस 24 दिसम्बर को मनाया गया। कार्यक्रम में साकेत आश्रम के महाराज श्री के अलावा अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा अनेक गणमान्य अधिकारी भी सम्मिलित हुए । इससे पूर्व 22 दिसम्बर को सूरत की सामूहिक शाखा के आयोजन में स्थापना दिवस मनाया गया। 22 दिसम्बर को ही दिल्ली विश्वविद्यालय में स्थापना दिवस मनाया गया। चित्तौड़गढ़ प्रांत में खेड़िया, सहाड़ा में; आलोक आश्रम बाड़मेर में, पूज्यश्री की जन्मस्थली बेरसियाला में, संघशक्ति कार्यालय जयपुर में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कल्याणपुर, चोहटन, सेड़वा, राजलदेसर, बालोतरा, सांचौर, रेलों की ढाणी, भिंयाड़, वलादर, केकड़ी, सिवाना, डीडवाना, उदयपुर, तेजावास, रानीवाड़ा, आकोड़ा, डूंगरपुर, नगवाड़ा खुर्द, छोटी रानी, पाली शहर, उन्दरा, कसूम्बी, ओसियां बाली, रायपुर, खिंदारा गाँव, हिसार, सिरोही, बूल, आईदानपुरा, मीठड़ा, नवी मुंबई, हैदराबाद, हनुमान टेकडी, बेंगलुरु, थराद, रामसण, गिड़ा में भी स्थापना दिवस मनाया गया। गोहिलवाड़ के राणपुर राणोजीगढ में मातृशक्ति ने 100 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न किया। पूर्व में संघ संस्थापक पूज्य तनसिंह जी का निर्वाण दिवस भी अनेक स्थानों पर 7 दिसम्बर को मनाया गया।

विशेष शाखाएँ :

जन्म शताब्दी हेतु अनेक जगह कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे हैं, तो शाखाएँ लगाकर निमंत्रण दिया जा रहा है। ये सब जन्म शताब्दी समारोह के ही अंग हैं। खोर (चित्तौड़गढ़), घंटियावाली, खरड़ी, बावड़ी, चित्तौड़ी खेड़ा, मधुवन, सेंथी आदि में सम्पर्क किया गया। नारायण निकेतन बीकानेर में, नीमकाथाना में, जालोर के धानसा, सेरना, मोदरान गाँवों में, रानीवाड़ा काबा में, वेरा जेतपुरा में, कोटा में, बूंदी में, जैसलमेर के चांधन, सांवला, सगरा, करमों की ढाणी, डेलासर, सोढा कौर में सम्पर्क किया गया। **(शेष पृष्ठ 10 पर)**

मैं निर्झर हूँ

– गिरधारी सिंह डोभाड़ा

सूर्य की तेज किरणों की प्रखर गर्मी से पानी भाप बनता है और यही भाप आकाश में जाकर बादल के रूप में परिवर्तित होती है। बादल नभ में इधर-उधर उमड़ता रहता है। यही बादल नीचे धरती की ओर दृष्टि करता है तो क्या देखता है? यही देखता है कि सूर्य देवता के प्रखर ताप से धरती के जीव मानव, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं। धरती लाचार होकर, असहाय होकर यह ताप सहती रहती है। क्या किया जाए, उसे कोई उपाय नजर नहीं आ रहा। वह ऊँचे ईश्वर की ओर कातर दृष्टि से ताकती रहती है। ईश्वर ने नीचे बादल की ओर देखा। बादल में भगवान की आँखों में छिपा भाव समझ लिया। उसने स्वर्ग रूपी गगन में उमड़ने के आनन्द को त्यागने का निश्चय कर लिया। उसने सोचा धरती को शीतलता प्राप्त होनी चाहिए और इसका उपाय यही है कि मुझे अपने बादल रूप अस्तित्व को मिटाकर बूंद-बूंद रूप में परिवर्तित होकर नीचे गिर जाना चाहिए ताकि निर्झर के रूप में बहकर नदी का, दरिया का रूप धारण करूँ। पहाड़ों, चट्टानों, जंगलों के बीच बहकर, इन अवरोधों को सहकर, उन्हें पार करके धरती पर बहा जाए, तभी धरती को शीतलता और उसकी संतानों को जीवनदान मिल सकता है।

बादल ने बूंद-बूंद के रूप में धरती पर गिरना शुरू कर दिया। बूंदों ने निर्झर का रूप धारण किया। निर्झर ने नदी का रूप लिया। नदी का पानी धरती पर फैल गया। धरती ने शीतलता तथा गीलापन धारण कर लिया। कुछ ही दिनों बाद हरी घास और पौधे उगकर निकलने लगे। पौधे और घास रंग बिरंगे फूलों से लदने लगे। धरती ने राहत की सांस ली कि मेरा उद्धार करने कोई आया तो सही, भले ही देरी से आया हो।

पाठक बन्धुओ! क्या यह लिखने की आवश्यकता है कि यह निर्झर कोई और नहीं, बल्कि हमारे श्रद्धेय पूज्य तनसिंह जी ही हैं। और यह त्रस्त धरती भी कोई और नहीं किन्तु हमारी माँ राजपूत जाति है, माँ क्षत्रिय कौम है। रेगिस्तान के जैसलमेर के ऊँचे-ऊँचे धोरों के बीच बसा बेरसियाला नामक अपने ननिहाल के गाँव में जन्मा यह निर्झर अपने श्रम-बूंदों से बह कर दरिया का रूप धारण कर राजस्थान को हरा-भरा करता हुआ, पूरे भारत को हरा-भरा करने प्रवाह रत है, बह रहा है।

अपनी कौम के फूलों के पौधों को हरा-भरा बनाने के लिए अपनी स्वयं की क्यारी के पौधों (अपने बच्चों) को उस क्यारी की मिट्टी (माँ सा मोती कंवर जी) के भरोसे छोड़कर माँ कौम के मुरझा रहे पौधों को हरा-भरा करने के लिए क्षत्रियत्व के संस्कारों से सिंचन करने निकल पड़ा, बह निकला। छोटे-छोटे पौधों को निरंतर, नियमित और निश्चित कार्य पद्धति से, सामुहिक कार्य प्रणाली से उसने अपने श्रम के जल से सींचना शुरू किया। एक क्यारी से दूसरी क्यारी, दूसरी से तीसरी क्यारी घूमता रहा और उनकी देखभाल करता रहा, धूप-ताप से बचाने उन पर छाया करता रहा ताकि कोई पौधा मुरझा न जाए। आँधी-तूफान से, घास खाने वाले पशुओं से उनकी रक्षा करता रहा ताकि कोई पौधा टूट न जाए, कोई सूख न जाए।

कुछ अहंकारी, विघ्न संतोषी लोगों ने उसके कार्य में अड़चने डाली, विरोध भी किया, अपमानित किया, अभियोगियों द्वारा दोष भी लगाये गये लेकिन वह न हारा, न थका, न टूटा और न रुका। उसने उन सभी चुनौतियों को स्वीकार किया, दृढ़ता से उनका सामना किया लेकिन नफरत से नहीं, प्यार से, प्रेम का झरना बहाकर। कुछ विरोधी उसके कार्य में जुड़ गये, कुछ सहयोगो हो गये। कुछ उसे छोड़कर भी चले गये लेकिन इसकी किसी के प्रति शिकायत नहीं थी। जिसने उसे प्यार दिया उसने भी उसे प्यार दिया और जिसने उसे नफरत दी उसे भी उसने प्यार से नवाजा।

किसने मुझे कहा था धोखा कभी न दूंगा
मैने कहाँ कहा था तेरा प्यार ही मैं लूंगा
जिसने दिया है जो भी हंसकर लिया है मैने

प्याले पिये जहर के तेरे समझ के मैने
अपने नहीं तो सोचा गैरों को ही सहूंगा
दीपक हूँ कौम का मैं ज्योति लिए जलूंगा

उसने भगवान से कहा–'क्षत्रिय कुल में प्रभु जन्म दिया तो क्षत्रिय के हित में जीवन बिताऊँ।' उसे अपने कार्य में अटल विश्वास था इसलिए देव से कहा–'यंत्री तूं मैं यंत्र तेरा'। उसे माँ भगवती पर भी अटल विश्वास था,–'तुम जानती व्यथा हमारी किसको पुकारें माँ'। वह निर्झर कोई आम निर्झर नहीं था। वह कहता है–

मैं निर्झर हूँ पर्वत से बह, गहरा नीचे तक आया हूँ।
पगली धरती के आँचल को, मैं तीर्थ बनाने आया हूँ।

तीर्थ कौन बना सकता है? राम ने अयोध्या में जन्म लिया तो अयोध्या तीर्थ बन गया। श्री कृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया, गोकुल में बड़े हुए और द्वारिका में निवास किया तो वे तीनों स्थान तीर्थ स्थल बन गये। क्योंकि श्रीराम और श्रीकृष्ण ने धर्म की रक्षा की, धर्म का, कर्तव्य का, सत्य का पालन किया जिससे वे भगवान के रूप में अवतारी पुरुष माने गये, पूजनीय हो गये। यह निर्झर भी कैसा है, वह इन पंक्तियों में अपने आपको प्रकट करता है–'**गुमराह हठीलों के प्रांगण में मैं अलख जगाने आया हूँ।**' अलख कौन जगाता है? वही न! जो तपस्वी होता है। पूज्य श्री तनसिंह जी भी तो तपस्वी ही थे। मोटे कपड़े की धोती, खाकी कमीज, खाकी साफा और पाँव में देशी जूती। नगर पालिका के प्रमुख, दो बार विधायक, दो बार सांसद रह चुके हों, वकालत की शिक्षा प्राप्त कर अच्छे वकील हों, कुशल व्यापारी, स्वच्छ छवि के राजनीतिज्ञ, कवि, साहित्यकार, प्रभावी वक्ता, शास्त्रों का गहरा अध्ययन और बीस–बीस घंटों तक कार्यरत हों, भगवती के उपासक, वह संत तपस्वी नहीं तो कौन हो सकता है।

'कल–कल कलरव करता हूं पर समझ न सकते भावों को।' पूज्यश्री के गीतों में और साहित्य में, मन के और कौम के प्रति वेदना के गहन भाव छुपे हुए हैं, इनको समझना आसान नहीं है। उनकी कृति श्री क्षत्रिय युवक संघ में डुबकी लगानी पड़ती है। केवल ऊपरी सतह पर नहीं बल्कि मन के पवित्र भाव के साथ निरन्तर और नियमित। उनका कथन है कि 'गाफिल मत रहो मैं आपको अन्तर की व्यथा बताने आया हूँ।' तुम गाफिल हो गये हो। तुम्हें स्वधर्म–पालन का भान नहीं रहा। इस निर्झर का जल निश्चित रूप से शीतल, निर्मल और मधुर है, इसे तुम पी लो और अपनी प्यास बुझा लो। मैं तुम्हें अपनी विद्वता या ज्ञान बताने नहीं आया हूँ पर अपना स्वप्न सुनाने आया हूँ। कौनसा स्वप्न? यही, अपने स्वधर्म पालन का स्वप्न। माँ कौम के गौरव को पुनः स्थापित करने का स्वप्न। यह निर्झर तपस्वी भी है। '**अपने तप की ले मशाल मैं ज्योति जगाता आता हूँ।**' कौनसी ज्योति? '**हारे अर्जुन को कर्मयोग पाठ पढाने आया हूँ।**' समाज की वर्तमान परिस्थिति से निराश हुए कौम के युवाओं में नई ज्योति का संचार, स्वधर्म पालन का, अपने कर्तव्य को सावधानी पूर्वक निष्काम भाव से करने का पाठ पढाने आया है यह निर्झर।

युवाओं में जोश कैसे भरा जाए? तो कहते हैं–**'अगणित किन्तु परस्पर मिलकर, बनी एकता की धारा।'** ऊँचे पर्वत से निकले इस निर्झर में कई अन्य धाराएँ आ–आकर मिलने लगती हैं और वह निर्झर नदी का रूप धारण कर लेता है। अब उसने दरिया का रूप धारण कर लिया है। प्रवाह बह रहा है। उसने गति और कद विस्तार भी बढ़ा लिया है। शिव की जटा से निकली पवित्र भागीरथी–गंगा अपने गंतव्य स्थान सागर में मिल गई है लेकिन उसका जल आज भी उतनी ही पवित्रता लिए बह रहा है। इस निर्झर की मूल पवित्र बूँद तो अपने गंतव्य स्थान को प्राप्त हो गई है, लेकिन इस बूंद ने अनेकों बूंदों को मिलाकर जो पवित्र बहाव बहाया है, आज भी कई नई–नई बूंदे उसमें मिलकर पवित्र होने का गर्व ले रही हैं। उसी पवित्रता के साथ उनका प्रवाह विस्तारित हो रहा है। यह निर्झर श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांगण में नया इतिहास रचता हुआ आगे ही आगे बहता, बढता जा रहा है।

निर्झर के रूप में माँ सा मोती कंवर जी के तणेराज और दरिया के रूप में माँ क्षत्रिय कौम के पूज्य एवं श्रद्धेय हे तनसिंहजी! आपके जन्म शताब्दी वर्ष के लिए शत्–शत् श्रद्धांजलि पुष्प अर्पित हैं। आपकी दिव्य आत्मा को शत्–शत् नमन। जय क्षात्र धर्म। जय संघशक्ति। ●

प्रेरक पू. तनसिंह जी

– छुट्टन सिंह, दाबड़दुम्बा

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम सृज्याम्यहम।।''

''जब-जब अधर्म बढ़ता है, धर्म की हानि होती है, तब-तब धर्म की स्थापना के लिए मैं आता हूँ''- ऐसा भगवान का कथन है, ऐसा शास्त्रों में विदित है। क्षत्रिय जाति ने कालान्तर में अनेकों महान् विभूतियों को अवतरित किया है, जिन्होंने इस धरती पर रहते हुए ऐसे असाधारण कार्य संपादित किये हैं, जिनको दोहराना साधारण मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है। इसी प्रकार लोक-कल्याण के लिए पाबूजी राठौड़, रामदेव जी, गोगा जी, इत्यादि अनेक लोक-देवताओं का अवतरण इस धरती पर समय-समय पर हुआ है। हमारे पूज्य तनसिंह जी भी मानव जाति के लिए एक मसीहा के रूप में इस धरती पर अवतरित हुए।

तनसिंह जी का जन्म बाड़मेर से 80 मील उत्तर पश्चिम या जैसलमेर से 40 मील दक्षिण पश्चिम में स्थित अपने ननिहाल बैरसियाला में उनके नाना सोढ़ा ठाकुर हड़मत सिंह जी के घर, विक्रम संवत् 1980 के माघ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, 25 जनवरी, 1924 को सूर्योदय से पूर्व हुआ था। जन्म के कुछ समय पश्चात् ही बालक तणैराज अपनी माता मोती कँवर जी के साथ बाड़मेर जिले के अपने पैतृक गाँव रामदेरिया में अपने पिता ठाकुर बलवंत सिंह जी महेचा के पास आ गए। बलवन्त सिंह जी जाने-माने व्यक्ति थे जिसके कारण उनके घर में हर समय लोगों का ताँता लगा रहता था। परन्तु, दुर्भाग्यवश मात्र पौने चार साल की उम्र में बालक तणैराज के सिर से पिता का साया उठ गया। पिता की मृत्यु के बाद बदली हुई परिस्थितियों में लोगों का व्यवहार भी बदल गया, पूर्व की भाँति लोगों का घर में आना-जाना मानो रुक-सा गया। वे लोग, जो पहले भीड़ जमाये रखते थे, अब उन्होंने घर से मुँह फेरकर जाना शुरू कर दिया, और यहीं से तनसिंह जी और उनकी माताजी के जीवन में कठिनाईयों का दौर प्रारम्भ हो गया। किन्तु ऐसी स्थिति में भी तनसिंह जी की माताजी ने धैर्य नहीं खोया और अपने पुत्र को शिक्षित करने का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने बाड़मेर में ही तनसिंह जी को स्कूली शिक्षा दिलाना प्रारम्भ किया। अर्थिक तंगी के कारण उनकी माताजी को रामदेरिया रहना पड़ता, परन्तु वे बीच-बीच में बाड़मेर आकर तणेराज को सम्भालती थी।

आगे की पढ़ाई के लिए तनसिंह जी बाड़मेर से जोधपुर के चौपासनी स्कूल में चले गए और वहाँ पर मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। सन् 1942 में उच्च शिक्षा के लिए तनसिंह जी पिलानी चले गए और वहाँ राजपूत छात्रावास में रहे। पिलानी में पढ़ते हुए अपने मित्रों की आर्थिक सहायता करने के लिए तनसिंह जी ने बहुत से काम किये, जैसे कि वाचनालय में नौकरी की, दाँतुन तोड़कर छात्रावास के साथियों को बेचे, क्यारियों में सब्जी उगाकर बेची, दर्जी की दुकान पर सिलाई का काम किया, ट्यूशन पढ़ाने का काम किया और इसी तरह सारे खर्च उठाए और अपने मित्रों की मदद की। पिलानी में पढ़ते हुए तनसिंह जी को तीन रुपये छात्रवृति मिलती थी, जिसको भी वे अपने एक सहपाठी मित्र को दे दिया करते थे और कहते थे कि उनके एक धनी मित्र ने गुप्त दान दिया है। इतना कुछ करने के बाद भी कई बार वे अपने मित्रों की सहायता के लिए पर्याप्त राशि नहीं जुटा पाते थे और इसीलिए एक बार उन्होंने सेठजी से पत्र लिखकर 60 रुपये यह

कहकर लिए कि वह राशि वापिस लौटा देंगे और उन्होंने वो 60 रुपये कुछ समय बाद लौटा भी दिए थे। तनसिंह जी एक होनहार बालक थे और समाज की पीड़ा से व्यथित थे और इसीलिए समाज के लिए कुछ करना चाहते थे, उनमें समाज के उत्थान के लिए कार्य करने की ललक थी। पिलानी से अपनी कॉलेज की शिक्षा पूर्ण करके वे वकालत की पढ़ाई के लिए नागपुर चले गए और वहाँ से अपने सहपाठियों एवं मित्रों से पत्र-व्यवहार के द्वारा संपर्क करते रहे। इसी बीच भारत आज़ाद होने वाला था और तनसिंह जी के मन में चिंता यह थी की भारत के आज़ाद होने के बाद राजपूत समाज का भविष्य क्या होगा। क्योंकि समाज के मार्गदर्शक लोग तो मूक दर्शक बने हुए थे। उनकी यही व्यथा उनके गीत में इस प्रकार झलकती है-

हैर जोवै मारगड़ो, नैणा सूँ लाचार भायो जोवै मारगड़ो।
सूझतो जै बैठो रैवे, अक्कल उणरी ढळगी है।।

इन पंक्तियों से उन्होंने समाज की स्थिति भी व्यक्त की और इनमें समाज के मार्गदर्शन का भाव भी झलकता है और इसलिए तनसिंह जी कई मीटिंगें और अधिवेशन करते रहे लेकिन इनसे भी वे संतुष्ट नहीं हुए। इसी प्रकार एक विचाराधीन सामूहिक संस्कारमय कार्य प्रणाली के तहत उन्होंने 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' की 22 दिसम्बर, 1946 को स्थापना की।

बाड़मेर में ही रहते हुए 25 वर्ष की आयु में तनसिंह जी नगर पालिका के चेयरमैन बने और बाद में दो बार एम एल ए और दो बार सांसद चुने गए, एक बार फिर लोगों का आना-जाना प्रारम्भ हो गया। तनसिंह जी समझ गए की भाग्य लौटा तो लोगों का सहयोग भी उमड़ पड़ा, योग्यता आयी तो लक्ष्मी भी आयी, पुरुषार्थ आया तो अपने-पराये लोग भी लौट आये, लेकिन तनसिंह जी ने कभी राजनीति को क्षत्रिय युवक संघ की कार्य प्रणाली पर हावी नहीं होने दिया। उन्होंने एक मंत्र दिया है- ''साथ रहो मिलकर, बाँटकर उपभोग करो।''

श्री क्षत्रिय युवक संघ एक सामूहिक संस्कारमय कार्यप्रणाली के तहत राजपूत समाज के युवक व युवतियों में संस्कार निर्माण का कार्य कर ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य एक ईश्वरीय कार्य है। संस्कार निर्माण का काम क्षत्रिय युवक संघ राजस्थान व गुजरात के साथ-साथ, देश के अन्य प्रदेशों एवं विदेशों में भी कर रहा है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना ऊर्ध्वगामिनी है, जो आज के दूषित वातावरण के विरुद्ध है और इसीलिए इस साधना के तहत संस्कार निर्माण का काम कठिन ज़रूर है, लेकिन असम्भव नहीं है। इसी संस्कार निर्माण के लिए संघ आवश्यक रूप से दैनिक एक घंटे का कार्यक्रम करने पर बल देता है। साथ ही, चार दिन, सात दिन और ग्यारह दिन के युवक एवं युवतियों के शिविर लगा कर, वातावरण बनाकर, संस्कार निर्माण का काम किया जाता है। इस तरह के शिविर आजकल देश के अन्य प्रदेशों में भी लगाए जा रहे हैं। साथ-साथ दम्पत्तियों के शिविर, यात्राएँ एवं छोटे बच्चों की वर्चुअल शाखाएँ लगायी जा रही हैं। महापुरुषों की जयन्तियाँ समय-समय पर अलग-अलग स्थानों के अनुसार मनाई जा रही हैं। इन कार्यक्रमों से समाज जागरण व संस्कार निर्माण का कार्य किया जा रहा है। श्री क्षत्रिय युवक संघ से सम्बन्धित प्रताप युवा शक्ति, प्रताप फाउंडेशन, क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन, इकोनोमिक फोरम आदि संस्थाएँ अपना-अपना काम कर रहीं हैं। संघ का पाक्षिक अख़बार ''पथ-प्रेरक'' व मासिक पत्रिका ''संघशक्ति'' है व संघ के साहित्य में अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनका अध्ययन कर लगातार संघ की विचारधारा से जुड़े रहकर ज्ञानवर्धन किया जा सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मानना है कि इसी

प्रकार समाज के व्यक्ति श्रेष्ठ कोटि के बनेंगे, समाज निर्माण व्यक्ति निर्माण से भिन्न नहीं है बल्कि सामाजिक पुनरुत्थान, वैयक्तिक उन्नति से ही सम्भव है। समाज में अथवा पूरे देश में अनेकों संस्थाएँ काम कर रही हैं परन्तु श्री क्षत्रिय युवक संघ ही एकमात्र ऐसी संस्था है जो हमारी युवा शक्ति एवं समाज को संस्कार निर्माण कर सन्मार्ग पर लाने का प्रयास कर रही है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य एक दो दिन का नहीं, बल्कि शताब्दियों की योजना है। आने वाले इतिहास में जब कौमों के इतिहास लिखे जायेंगे, उसमें इस संस्था की अग्रणी भूमिका होगी।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी मितभाषी एवं कठोर परिश्रमी थे, सादगी की प्रतिमूर्ति थे, उनकी संकल्प शक्ति अद्‌भुत थी और जब वे व्यापारिक क्षेत्र में उतरे तो चमत्कार ही कर दिया। उपरोक्त सभी विशेषताओं के कारण ही उनको मसीहा कहना उचित होगा। श्री बाला सती जी ने एक बार फ़रमाया था कि तनसिंह जी कहीं नहीं गए हैं, यहीं हैं, उन्होंने प्रकट नहीं हो कर के मनुष्य जीवन में ही रहकर मानव कल्याण का कार्य किया।

समाज के इस अनूठे मसीहा पूज्य तनसिंह जी का देहावसान, 7 दिसम्बर, 1979 को हो गया। पूज्य तनसिंह जी हमें छोड़कर जल्दी ही चले गए परन्तु हम सभी के लिए, युगों-युगों तक, देश, काल और हर परिस्थिति के लिए मार्ग प्रशस्त कर गए। सत्ततर वर्षीय श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य आज तीव्र गति से चल रहा है जिसके संस्थापक हमारे पूज्य तनसिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष भी 28 जनवरी, 2024 को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में मनाया गया। ●

पृष्ठ 5 का शेष

समाचार संक्षेप

संदेश यात्रा :

28 जनवरी को जन्म शताब्दी समारोह में दिल्ली पहुँचने के लिए संदेश पहुँचाने हेतु पूज्यश्री के जन्म स्थल बेरसियाला से संदेश यात्रा प्रारम्भ हुई स्थापना दिवस 22 दिसम्बर को। राजस्थान के विभिन्न जिलों में घूम कर संदेश देते हुए प्रथम चरण का समापन 31 दिसम्बर को जयपुर में हुआ। सभी स्थानों पर बड़े जोश और उमंग के साथ संदेश यात्रा का स्वागत किया गया। दूसरा चरण जयपुर से 4 जनवरी को प्रारम्भ हुआ। दूसरी संदेश यात्रा जोधपुर से प्रारम्भ की गई।

अन्य प्रदेशों में सम्पर्क :

जन्म शताब्दी समारोह के लिए दिल्ली में, उत्तरप्रदेश में और हरियाणा में सम्पर्क किए जाने के लिये स्वयंसेवकों के दल बनाकर भेजे गए। इनके द्वारा गाँव-गाँव जाकर गहन सम्पर्क किया गया और समाज बन्धुओं की बैठकें आयोजित कर पूज्य तनसिंह जी तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया गया और 28 जनवरी को जन्म शताब्दी के मुख्य समारोह में सम्मिलित होने के लिये निमंत्रण दिया गया। उत्तरप्रदेश के सहारनपुर क्षेत्र के गाँवों में 15 से 19 दिसम्बर तक सम्पर्क किया गया। 16 से 19 दिसम्बर तक हरियाणा के अनेक गाँवों में दो अलग-अलग दलों ने सम्पर्क किया। 16 से 18 दिसम्बर को फरीदाबाद, पलवल व फरीदाबाद क्षेत्र में सम्पर्क बनाया। एक दल ने 24 व 25 दिसम्बर को दिल्ली शहर में सम्पर्क किया। 22 से 25 दिसम्बर तक उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरपुर, मेरठ व बागपत क्षेत्र में सम्पर्क हुआ। 23 से 25 तक हरियाणा में एक दल सम्पर्क करता रहा। 26 दिसम्बर को उत्तरप्रदेश के बागपत क्षेत्र के कुछ गाँवों में तथा 27 दिसम्बर को उत्तरप्रदेश के साठा चौरासी क्षेत्र के कुछ गाँवों में संपर्क किया गया तथा मुख्य समारोह में आने का निमंत्रण दिया गया। ●

श्री क्षत्रिय युवक संघ एक साधना मार्ग

– चैनसिंह बैठवास

आम आदमियों की धारणा है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ एक सामाजिक संस्था है जो राजपूत समाज के लिए काम करती है। राजपूत समाज के लोग जो संघ से जुड़े हुए नहीं हैं उनका मानना है कि संघ बालकों का खेल है सिर्फ। एक उछल-कूद है, यह मानकर मन ही मन वे संघ पर मुस्कराते हैं। संघ की बड़ी बातें सुनकर, वे कहते हैं-इस जमाने में कभी ऐसा हो सकता है? इससे कुछ नहीं बनने वाला, कह कर संघ की आलोचना करते हैं। ऐसे लोगों के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा-

हम पे हँसते हैं उनको तो हँस लेने दो
फिर ये हँसने के मौके बने ना बने
कोई बादल जो बरसे बरस लेने दो
हम पर कुदरत के मोटे चंदोवे तने

प्रत्येक महान कार्य का सम्पादन करने के लिए ईश्वर से योगात्मक एकता स्थापित होना आवश्यक है। महान कार्य ईश्वरीय कार्य होते हैं इसलिए ईश्वर से एकता स्थापित होने पर महान कार्यों की पूर्ति सरलता से हो सकती है।

पूज्य श्री तनसिंह जी कहते थे कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है, इसलिए उन्होंने ईश्वर से योगात्मक एकता स्थापित करने के लिए एक-निश्चित साधना मार्ग को अपनाया।

श्री क्षत्रिय युवक संघ एक साधना मार्ग है जिस पर चलकर हम अपने स्वधर्म का पालन करते हुए अपने अभिष्ट लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।

शक्ति उपासक क्षत्रिय धर्मच्युत होने से शक्तिहीन होकर कमजोर बन गया, तब उसकी व्यवस्था अव्यवस्था में तब्दील हो गयी, तभी तो पूज्य श्री तनसिंह जी ने इस क्षत्रिय कौम को शक्ति की उपासना की ओर उन्मुख करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी साधना मार्ग की स्थापना की।

शक्ति के दो रूप हैं-एक मूर्त और दूसरा अमूर्त। मूर्त रूप के अन्तर्गत

(1) बाहुबल, (2) साधन बल और (3) जन बल आते हैं।

1. बाहुबल :- श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना में नित्य, निरन्तर और नियमित कार्यों और शिविरों में साधकों को विभिन्न खेलों, व्यायाम और शारीरिक श्रम की प्रक्रिया से गुजारा जाता है जिससे साधक शरीर रूप से स्वस्थ, तन्दुरुस्त और कष्ट सहिष्णु बनने का अभ्यास करते हैं ताकि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य करने में समर्थ हों। भूख, सर्दी, गर्मी सहन करने की शरीर में सामर्थ्य हो ताकि श्री क्षत्रिय युवक संघ के कठिन रास्ते पर चला जा सके। संघ की कठोर साधना का हेतु है हम कष्ट सहना सीखें, कष्ट सहिष्णु बनें, सहनशील बनें, भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, वर्षा, आँधी सहने की शक्ति हममें हों।

2. साधन बल :- सांघिक साधना में मुख्य साधन बल है-स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, स्वस्थ बुद्धि और स्वस्थ हृदय। शरीर के साथ स्वस्थ मन, स्वस्थ बुद्धि और स्वस्थ हृदय का होना जरूरी है, अकेला बाहुबल पर्याप्त नहीं है। शारीरिक शक्ति के साथ-साथ बौद्धिक शक्ति (विचार-शक्ति) भी प्रबल बननी चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में बौद्धिक विकास के लिए बौद्धिक खेल, बौद्धिक व अन्य बौद्धिक चर्चाएँ होती रहती हैं।

श्री क्षत्रिय युवक संघ बौद्धिक शक्ति (विचार-

शक्ति) तक ही सीमित नहीं है, इसके परे **हृदय की शक्ति** है, जो अति आवश्यक है। संघ बुद्धि के परे की चीज भी हमें सिखाता है और वह है हृदय से सम्बन्धित जिसका भावना से सम्बन्ध है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ ज्ञान प्रदीप्त हृदय का आन्दोलन है। समाज के लिए त्याग करने की बात, उत्सर्ग करने की बात, माता-पिता, भाई, पुत्र आदि के लिए त्याग व उत्सर्ग करने की बात बुद्धि नहीं सिखाती। श्री क्षत्रिय युवक संघ तीनों शक्तियों शारीरिक, मानसिक व हृदय की शक्तियों का समन्वय करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ कर्म, विचार व भाव तीनों के बलवान होने की बात कहता है।

3. जन बल :- श्री क्षत्रिय युवक संघ अनियंत्रित भीड़ नहीं, अनुशासित व्यक्तियों का संगठन है, जिनका एक ही ध्येय, एक ही मार्ग, एक ही नेता, एक ही ध्वज व एक ही संस्था है-यही सच्चा जन बल है।

संघ की शिक्षा :- 1. अनेकता हमारे जीवन में उलझनें लाती है। एक से अपने आपको बांध लें। एक के विचार के आधार पर ही संगठन हो सकता है। 2. अपनत्व का भाव ही हमें आपस में जोड़ता है। यह पारिवारिक भाव है। संघ खेलों, चर्चाओं, बौद्धिकों के जरिये उक्त शिक्षा को हमारे जीवन में ढालने का प्रयास करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक ध्वज के तले, एक ध्येय, एक मार्ग पर एक ही दिशा में अपने एक नेता का अनुसरण करता हुआ समाज को सुसंगठित करने का सृजनात्मक कार्य नियमित रूप से करता है। यही जन बल की उपासना है।

शक्ति का दूसरा रूप है- **अमूर्त रूप**- जिसके अन्तर्गत आते हैं (1) मनोबल और (2) ईष्ट बल।

1. मनोबल :- अपने संकल्प में विश्वास की शक्ति का आधार मनोबल है। अपने संकल्प पर दृढ रहने की शक्ति मनोबल देता है। हमने जो निश्चय किया है, विचार किया है, संकल्प किया है, उसका आधार मनोबल है। अनुकूल विचार से मनोबल में वृद्धि होती है और प्रतिकूल विचार से मनोबल में ह्रास होता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ साधक के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करता रहता है जिससे उनका मनोबल बढ़ा रहे। मनोबल की उपासना के लिए संघ ने सहयोगी और सामूहिक जीवन को अपनाया है। साधकों में एक दूसरे के सहयोग से और सामूहिक जीवन जीने के अभ्यास से मनोबल का उपार्जन सहज रूप से होता है)

2. ईष्ट बल :- बुद्धि से परे जो शक्ति है, उसे ईष्ट बल कहते हैं। इसको तर्क से नहीं समझ सकते, इसका उत्तर बुद्धि नहीं दे सकती। मीरां को जहर दिया, प्रहलाद को अग्नि में जलाया गया, पर वे मरे नहीं, यह बुद्धि से समझा नहीं जा सकता। इसका उत्तर जानने के लिए बुद्धि के परे जाना होगा। यह इन्द्रियों से परे की चीज है। इन्द्रिय ज्ञान से इसे नहीं समझ सकते। इष्ट बल को प्राप्त करने का सर्वप्रथम उपाय है उन्हें स्वीकार करें यानी आस्तिक बनें। यह समझना होगा कि संघ केवल संस्था नहीं, न केवल सामाजिक कार्य है, यह एक उपासना है, ईश्वरीय कार्य है। इसके पीछे ईश्वर का हाथ है, तो हमें स्वतः प्रेरणा मिलती रहेगी। क्षात्र धर्म का पालन करते हुए ईश्वर प्राप्ति यह संघ का शिक्षण है, इसमें विश्वास करना होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रार्थना, मंत्रोच्चार द्वारा ईष्ट बल प्राप्ति का अभ्यास करना सिखाता है।

पूज्य श्री तनसिंह जी का कहना था कि श्री क्षत्रिय युवक संघ ईश्वरोपासना है। पूज्य श्री ने साधकों के दैनिक जीवन में आठ सूत्र सम्मिलित किए हैं-

1. **शोच-शुद्धि-**सूर्योदय से पूर्व शौच, स्नानादि।
2. **सन्ध्या-**उपासना, नियमित-निरन्तर ईश चिन्तन।
3. **श्रम-**परिश्रम करना, निठ्ठला न बैठना।
4. **सेवा-**अपने अतिरिक्त किसी अन्य के निमित्त परिश्रम करना।
5. **स्वाध्याय-** सद् साहित्य का पठन।
6. **चिन्तन-मनन-** नित्य डायरी लेखन।
7. **मौन-** अनावश्यमक न बोलना।

8. समाधि– रात को सोने से पहले इष्ट का स्मरण और उसके बाद सीधा सो जाना।

हर साधक की दिनचर्या में इन अष्ट सूत्रों की अत्यधिक महत्ता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ सम्पूर्ण योग मार्ग (संयोमा) है। इस सम्पूर्ण योग मार्ग में पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने साधना पथ में आठ सिद्धान्तों का निरूपण कर संघ के साधकों के लिए एक मार्ग प्रशस्त किया जिस पर चलकर अपनी मंजिल पा सकते हैं। इन आठ सिद्धान्तों में पतञ्जलि के अष्टांग योग का पूर्ण समावेश है। संघ के साधकों के लिए जिन आठ सिद्धान्तों का निरूपण किया है वे निम्न हैं–

1. बलिदान का सिद्धान्त, 2. समष्टि योग, 3. श्रद्धा, 4. अभीप्सा, 5. शरणागति, 6. आत्मोद्घाटन, 7. समर्पण, 8. समाधि।

श्री क्षत्रिय युवक संघ की ईश्वरोपासना में यद्यपि अष्टांग योग का प्रत्यक्ष में समावेश तो नहीं है तथापि अष्टांग योग के सिद्धान्तों के क्रियान्वयन से जो परिणाम प्राप्त होते हैं वे संघ के विभिन्न कार्यक्रमों से स्वतः प्राप्त होने लगते हैं। पतञ्जलि के अष्टांग योग के आठ अंग हैं–

1. यम– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, इन पाँचों का नाम यम है।

''अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।''

(योग दर्शन 2/30)

(क) अहिंसा– किसी की हिंसा न करना और मन, वाणी और शरीर द्वारा कभी किसी को किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुँचाना। पूज्य श्री तनसिंह जी ने संघ में इस बात को स्पष्ट किया है कि अपनी मौज-मस्ती व सुख-सुविधा के लिए दूसरों के आराम में, उनकी सुख-सुविधा में किसी प्रकार की खलल पैदा न करें। संघ में किसी को किसी भी प्रकार का कष्ट देने की बात ही नहीं है।

(ख) सत्य– सदैव सत्य वाचन हो। जैसा देखा, सुना व जाना हो वैसा ही शुद्ध भाव मन, वाणी में हो और उसी के अनुरूप क्रियान्विती हो। संघ की साधना में भी इसी के अनुरूप अभ्यास कराया जाता है ताकि कथनी और करनी में अन्तर न हो।

(ग) अस्तेय– इसका अभिप्राय है चोरी न करना। दूसरों की किसी वस्तु पर बिना अधिकार हक जमाना, शास्त्र विरुद्ध ढंग से वस्तुओं को ग्रहण करना चोरी है। मन, वाणी, शरीर द्वारा किसी के भी स्वत्व (अधिकार) को न चुराना, न छीनना अस्तेय है। संघ के शिविरों में सभी के व्यवहार को देखकर कोई भी चोरी करने का मानस तक नहीं बना पाता, चोरी तो करनी दूर की बात है।

(घ) ब्रह्मचर्य– दिल-दिमाग में काम-वासना का अभाव ही ब्रह्मचर्य है। संघ की साधना पद्धति साधक के जीवन को हर क्षण व्यस्त रखती है। इसकी शिक्षण पद्धति से गुजरने वाला साधक मर्यादित जीवन व्यतीत करने लगता है।

(ङ) अपरिग्रह– अर्थात् संग्रह न करना। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि किसी भी भोग सामग्री का संग्रह न करना अपरिग्रह है। संघ के साधक अपनी न्यूनतम आवश्यकता रखते हैं। अपनी आवश्यकता पूर्ति के अलावा बची सम्पदा को संघ को अर्पित कर देते हैं।

2. नियम– शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान, ये पाँच नियम हैं।

''शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधनानि नियमाः ।''

(योगदर्शन 2/32)

(क) शोच– शौच कहते हैं शुद्धि को, पवित्रता को। संघ में बाहरी शुद्धि के साथ-साथ भीतरी शुद्धि के लिए भीतर व्याप्त दुष्वृतियों (अहंता, ममता, रागद्वेष, ईर्ष्या, भय और काम-क्रोधादि) को बाहर निकालने का अभ्यास सतत् कराया जाता रहता है जिससे भीतरी पवित्रता पनपना आरम्भ हो जाती है।

(ख) सन्तोष– जो कुछ मिल जाय उसी को प्रभु का प्रसाद मानकर संतुष्ट रहना सन्तोष है। संघ के शिविरों में रूखा-सूखा जो भी मिल जाए, उसी को

ग्रहण कर प्रसन्न रहना श्री क्षत्रिय युवक संघ की शिक्षा पद्धति का परिणाम है।

(ग) तप– अपने सद्उद्देश्य की प्रगति में जो भी कष्ट, बाधाएँ, प्रतिकूलताएँ आए उनको सहजता से स्वीकार करते हुए निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढना तप है। स्वधर्म पालन और कर्तव्य की राह पर चलने वाले साधकों के जीवन में कष्ट, बाधाएँ, प्रतिकूलताएँ आने पर भी बिना विचलित हुए निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढना संघ की ऊर्ध्वगामी साधना है, तप है।

(घ) स्वाध्याय– सद्साहित्य का श्रद्धापूर्वक अध्ययन करना स्वाध्याय है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने संघ के साधकों को सद्साहित्य पढने के लिए सदैव प्रेरित किया है। स्वाध्याय संघ का अनिवार्य कार्यक्रम है।

(ङ) ईश्वर प्रणिधान– सब कुछ ईश्वर को अर्पित कर उसके परायण होना ईश्वर प्रणिधान है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपनी साधना पद्धति में निष्काम भाव से कर्म करने पर बल दिया है। फल की चाह न करते हुए उसे भगवद् अर्पण कर दें। संघ की सारी चेष्टाएँ ईश्वर अनुकूल है।

3. आसन– पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन आदि किसी भी आसन में स्थिरता और सुखपूर्वक बैठना आसन कहलाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के बौद्धिक कार्यक्रम में ढाई-तीन घंटे लगातार स्थिर बैठने का अभ्यास होता रहता है।

4. प्राणायाम– आसन के सिद्ध हो जाने पर श्वास-प्रश्वास की गति को यथाशक्ति नियन्त्रित करना प्राणायाम कहलाता है। संघ कार्यकर्ताओं की दिनचर्या में प्राणायाम को सम्मिलित किया गया है। प्राणायाम की क्रिया से चित्त और चंचल मन शान्त हो जाता है। संघ के विभिन्न कार्यक्रमों में रत साधकों का चित्त और मन शान्त होता ही है, साथ में मस्तिष्क में शान्ति और धीरता आती है।

5. प्रत्याहार– विषयों से इन्द्रियों को उदासीन कर इन्हें और मन को अन्तर्मुखी करना ही प्रत्याहार है। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने शिविरों में प्रातः चार बजे से रात्रि दस बजे तक प्रत्येक कार्यक्रम में नित्य कर्मों से लेकर जागरण, खेल, अल्पाहार, चर्चा, बौद्धिक, स्नान, प्रार्थना, भोजन, विनोद सभा आदि कार्यक्रमों में प्रत्याहार का ही शिक्षण देता है।

अष्टांग योग के आठ अंगों में उपरोक्त पाँच में बहिरंग साधनों का उल्लेख है। अब आगे शेष तीन में अंतरंग साधनों का उल्लेख है।

6. धारणा– अपनी चितवृति को किसी एक जगह स्थिर करना धारणा कहलाता है। अपने स्वधर्म का पालन करते हुए परमेश्वर प्राप्ति का सतत् अभ्यास ही श्री क्षत्रिय युवक संघ में धारणा है।

7. ध्यान– अपने चित्त को हृदय या भ्रू-मध्य में स्थित परमेश्वर में स्थिर कर देना ही ध्यान है। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने ईष्ट का ध्यान प्रातःकालीन व सायंकालीन करने के लिए कहता है और साधकों को इसके लिए प्रेरित करता रहता है।

8. समाधि– आनन्दमय, ज्योतिर्मय व शांतिमय परमेश्वर का ध्यान करता हुआ साधक परमेश्वर में इतना तल्लीन, तन्मय व तद्रूप हो जाए कि वह स्वयं को भी भूल जाए। ध्याता, ध्यान और ध्येय जब एकाकार हो जाते हैं, तो यही अवस्था समाधि कहलाती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ सम्पूर्ण योग मार्ग है। यह इस स्थिति की साधना का समुचित मार्ग प्रशस्त करता है।

इस प्रकार पतञ्जलि के अष्टांग योग से उपलब्ध होने वाली सम्पूर्ण स्थिति श्री क्षत्रिय युवक संघ की विलक्षण कार्य प्रणाली के अन्तर्गत उसके दैनिक कार्यक्रमों में मनोयोग से लगे रहने पर स्वतः ही उपलब्ध हो जाती है।

अष्टांग योग की साधना के अतिरिक्त ईश्वरोपासना के तीन मार्ग हैं- कर्म, ज्ञान और भक्ति। श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्य पद्धति कर्मयोग से प्रारम्भ होती है। तमोगुण से आक्रान्त सुप्त समाज में जागृति का शंख बजाकर उसे कर्म प्रवृत करने का जो कार्य हो रहा है, वह संघ की कर्म उपासना है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ सुप्त क्षात्र शक्ति को जागृत करने का मंत्र फूंक कर समाज को जिस कर्म में प्रवृत करने की बात करता है, वह है निष्काम कर्मयोग। श्री क्षत्रिय युवक संघ फलाकाँक्षा रहित निष्काम भाव से ईश्वर के निमित्त कर्म करने को प्रेरित करता है जो निष्काम कर्मयोग की साधना है। हमारी उपासना का निष्काम कर्म योग सर्वश्रेष्ठ है। स्थान, समय या दिन नहीं, समस्त कर्म ही उपासना है। निष्काम भाव से किया गया कोई भी कर्म प्रार्थना से कम महत्त्वशाली नहीं है। निष्काम भाव से कर्म योगी का जीवन ही प्रार्थना बन जाता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ क्या है? इस सम्बन्ध में संघ के संरक्षक आदरणीय श्री भगवान सिंह जी कहते हैं- इसको समझने के लिए हम रहिमन जी के इस दोहे से समझ सकते हैं-

''रहिमन यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहीं
शीश उतारे भुई धरे सो पैठे घर माहिं।''

''श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रेम का घर है खाला का घर नहीं। खाला कहते हैं भुआ या मौसी को। शीश उतारे भुई घरे सो पैठे घर माहिं.....ऐसा त्याग, ऐसा समर्पण अपने समाज के प्रति, अपने धर्म के प्रति, अपने राष्ट्र के प्रति और सम्पूर्ण मानवता के प्रति जिनका हो, अपना जीवन न्योछावर कर देते हैं, वे श्री क्षत्रिय युवक संघ को समझ सकते हैं। ऐसे ही विशिष्ट लोगों का घर श्री क्षत्रिय युवक संघ है। ऐसे त्यागी व समर्पित लोग ही इस घर में प्रवेश कर सकते हैं।''

पूज्य श्री तनसिंह जी और श्री क्षत्रिय युवक संघ का वही सम्बन्ध है जो सृष्टा और सृष्टि का है। जैसे श्री कृष्ण ने स्वधर्म विमुख बने अर्जुन को गीता के माध्यम से अपना स्वधर्म समझाया था, उसी तरह पूज्य श्री तनसिंह जी ने क्षत्रियों को श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से स्वधर्म की शिक्षा देना प्रारम्भ किया।

श्री क्षत्रिय युवक संघ समय की मांग और जगत की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए क्षत्रिय युवकों को एक विशिष्ट साधना प्रणाली, सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा सतोगुण की ओर जाने को प्रेरित करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ सुप्त क्षात्रशक्ति को जगाने, भूले पथिकों को फिर से स्वधर्म का पाठ पढ़ाने और निस्तेज होती इस क्षात्र परम्परा को पुन: अक्षुण्ण बनाने के लिए सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के माध्यम से क्षत्रियों में क्षत्रियत्व के गुणों को विकसित करने में लगा हुआ है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य श्री तनसिंह जी का जीवन दर्शन है। यह एक जीवन प्रणाली है जिसके द्वारा न केवल लौकिक जीवन को सुख एवं आनन्दपूर्वक जिया जा सकता है बल्कि पारलौकिक लक्ष्य को भी आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने साधना पथ में कहा है-

''यहाँ के पवित्र वातावरण में बाहर भीतर की शुद्धि तथा चित्त की उस प्रसन्नता की प्राप्ति हो जाती है जो सत्व के प्रकाश से उद्दीप्त है।''

श्री क्षत्रिय युवक संघ क्या करता है, इसमें क्या होता है? इस सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया-''अभिनव तप से यहाँ जगत के भाग्य लिखे जाते हैं।''

श्री क्षत्रिय युवक संघ में नये आने वालों को सम्बोधित करते हुए पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा-

''नये आने वालो, तुम्हें साधना की, अनोखी परम्परा मुझे है सुनानी'' फिर चेताते हुए आगे कहा-

''सुखों को जला के भी, सपने न टूटें, इसी पे हमें जिन्दगी है बितानी''

श्री क्षत्रिय युवक संघ एक साधना मार्ग है और साधना मार्ग का अन्तिम छोर ईश्वर है। जब तक व्यक्ति का अन्तःकरण, अंतःज्ञान और अन्तर्दृष्टि परम से नहीं जुड़ जाती, तब तक ईश्वर से एकता सम्भव नहीं और उसकी स्मृति में बाहरी बात ज्यादा रहती है, इसलिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा-

''राहों को दिखाया है भीतर ही नहीं देखा
तम नष्ट किया भीतर नव ज्योति की नहीं रेखा।''

पूज्य श्री तनसिंह जी का समाज जागरण अन्तःकरण का जागरण है यानी निज का निर्माण है। निज का निर्माण करके ही हम समाज जागरण के लिए काबिल हो सकते हैं।

''निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता।''

इसलिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा-''मैं अपनी चिन्तनधारा भीतरी जगत की ओर ले जाना चाहता हूँ।''

''अब अन्तर के तप की धूनी को रमाना है
जो बाहर दिखता है भीतर भी दिखाना है।''

पूज्य श्री तनसिंह जी का अन्तःकरण, अन्तःज्ञान और अन्तर्दृष्टि परम से जुड़ी हुई थी। अब उनकी स्मृति में बाहरी बातें ज्यादा नहीं रही, उनके प्रति उनका कोई आकर्षण नहीं रहा। इस बात को उन्होंने इस तरह प्रकट किया है-

'' जीने के बहाने मुझे आये नहीं रंग बिरंगे रंग मुझे भाये नहीं
तेरे ही रंग में जीने के ढंग हैं, प्राणों में प्राण को जोड़ दे।''

पूज्य श्री तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के साधकों को सम्बोधित करते हुए कहा-

साधक की शक्ति का एक भी अणु, उसके हृदय का एक भी पवित्र भाव, उसके जीवन का एक भी दिन और उसके द्रव्य का एक भी पैसा जिस दिन समाज सेवा की साधना से छिपा कर नहीं रखा जायेगा, उसी दिन साधक को एक नया दृष्टिकोण मिलता है। उसके जीवन का प्रत्येक व्यापार, उसका विद्याध्ययन, विवाह, नौकरी और कुटुम्ब पालन सभी उसी ध्येय के निमित्त होते हुए दिखाई देंगे। जगत के सभी व्यापारों में समाज कार्य का होना, यहाँ तक कि खेल-कूद और गायन आदि में भी समाज जागरण का कार्य दिखाई दे और जिस दिन समाज जागरण के कार्य में ही संसार के सभी कर्म सम्पादित होते दिखाई दें, उस दिन समाज सेवक बनता है एक ध्येय निष्ठ योगी। तब ध्येय और साधक में कोई अन्तर नहीं दिखाई देगा। दोनों साध्य और साधक एकाकार हो जाते हैं। साधक को ऐसी अवस्था पर पहुँचने के बाद उसका ध्येय दूर नहीं, अपने ही भीतर दिखाई देता है। गीता में ऐसे भक्त साधक का चित्रण करते हुए भगवान ने कहा-

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं ने प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।

(गीत-6/30)

जो मुझको सब स्थानों में और सबको मुझ में देखता है, उससे मैं कभी नहीं बिछुड़ता और न वह ही मुझसे कभी दूर होता है।

भगवान स्वयं अपने आपको एकीभाव से स्थित होना बताते हैं।

नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।

(गीता-10/1)

मैं स्वयं उनके अन्तःकरण में एकी भाव से अर्थात् आत्म-भाव में स्थित हुआ ज्ञान के दीप से अज्ञान से उत्पन्न अंधकार को नष्ट करता हूँ।

श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना :

लोगों को स्वधर्माभिमुख करने की संघ की यह साधना देश, काल, समाज एवं परिस्थिति निरपेक्ष अनन्तकाल तक चलने वाली साधना है। संघ प्रवृति प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक आदर्श जीवन प्रणाली है जो शाश्वत आवश्यकता की पूर्ति के लिए है। जो किसी काल, मर्यादा या जाति व देश तक सीमित नहीं रह सकती।

पूज्य श्री तनसिंह जी की देन श्री क्षत्रिय युवक संघ अद्भुत, दिव्य एक ज्योति पुञ्ज है, साधना मार्ग है। यह एक विलक्षण कार्य प्रणाली द्वारा लोगों के जीवन को एक साँचे में ढालने का निरंतर व नियमित अभ्यास कराता है। कोई भी इसका अनुसरण कर जीवन की अंतिम मंजिल पा सकता है। संघ कार्य भागवत कार्य है और संघ का संचालन और इसे पोषित करने वाली सत्ता भी भागवत सत्ता ही है। संघ का कार्य है मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाना। मनुष्य देवत्व की ओर बढेगा तो सभी क्षेत्रों में सर्वांगीण विकास होगा। संघ साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए है।

जिनका जीवन संघमय हो वही संघ को समझ सकता है। ऐसे ही एक संघ के साधक श्री कैलाशपाल सिंह जी इनायती, जिन्होंने संघ के सम्बन्ध में अपने भाव प्रकट करते हुए कहा है-

- ''संघ वह मानसरोवर है जहाँ हँसों को मोती चुगने के अवसर मिलते हैं।
- संघ वह स्वाति-नक्षत्र की बूँद है जिससे प्यासों की पास बुझती है।
- संघ वह कल्पतरु है जिससे हमें अमरता का फल प्राप्त होता है।
- संघ वह यज्ञ-कुण्ड है, जिसमें साधक अपने जीवन की आहुति देकर नव-जीवन प्राप्त करते हैं।
- संघ वह साधना केन्द्र है जहाँ स्वयं सिद्ध पुरुषों के वरद् हस्तों की छाया तले जिज्ञासु, श्रद्धालु और भक्त साधक अपने जीवन में साधना के माध्यम से चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति कर सकते हैं।
- संघ स्वयं-सिद्ध पुरुषों की वह क्रीड़ा-स्थली है, जहाँ वे लोक कल्याण के लिये ईश्वरीय शक्ति को अवतरित कर अपने संकल्प की पूर्ति करते हैं।
- संघ आत्म-सिद्ध पुरुषों की आत्म-ऊर्जा का वह आभा-मण्डल है, जहाँ साधकों के जीवन में स्वतः ही अलौकिक योगिक क्रियाएँ होने लगती हैं।
- संघ आदिकालीन वह गुरु-कुल व्यवस्था है जिसकी पीठ की ऊर्जा व तपस्या से साधक तपस्वी व तेजस्वी बनकर मानवता को अपने जीवन जीने की व्यवस्था देते हैं।
- संघ द्वापर के ब्रज की गोपियों की विरह- व्यथा से भिन्न और क्या है?
- अपमान से अकुलाती द्रोपदी के जलते हृदय की तीव्र वेदना से भिन्न संघ क्या है?
- कर्नाटक की महारानी सुधन्वा की आँख से टपके बेबसी के आँसुओं से भिन्न संघ क्या है?
- मीरा की गिरधर से मिलन की तड़पन से भिन्न संघ क्या है?
- त्रेतायुग की भीलनी के भावों से भिन्न संघ क्या है?
- और? और पूज्य गुरुदेव तनसिंह जी की व्यथा का ही नाम तो संघ है। जिस संघ वृक्ष की छाया तले मेरे बचपन की क्रीड़ाएँ, यौवन का पसीना और वृद्धावस्था की विश्रान्ति बिखरी पड़ी है।''

संघ के तत्कालीन संघ प्रमुख व वर्तमान में संघ के संरक्षक आदरणीय श्री भगवानसिंह जी ने सन् 1994 के अपने नव वर्ष संदेश में संघ के बढते भावी कदम के सम्बन्ध में बताया -

''भारत वर्ष के सुदूर पूर्व, उत्तर, दक्षिण, पश्चिम और मध्य भागों में संघ की स्थापना करनी है। इसके बाद सम्पूर्ण विश्व में क्षत्रिय-प्रवृति के लोगों की खोज करके उनको शिक्षित-दीक्षित कर सन्मार्ग पर लाकर के उनको मानव-कल्याण मार्ग पर लगाना है। क्षत्रिय के इसी कर्तव्यबोध से सनातन धर्म को विश्व धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करना है।''

1994 के बाद तो संघ का बहुत विस्तार हुआ है और भारतवर्ष के विभिन्न भागों में पहुँच गया है। विदेशों में भी कई जगह इसकी शाखाएँ लगती हैं। आदरणीय श्री भगवानसिंह जी का सपना साकार हो रहा है।

पूज्य श्री तनसिंह जी एक सद्गुरु के रूप में हमारे बीच आये। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी साधना मार्ग का आविर्भाव किया अपनी कर्म प्रणाली में उसे प्रतिष्ठित कर, क्षात्रशक्ति को अपने उत्तरदायित्व का बोध करा, इस धरोहर के रूप में हमें प्रदान कर अलविदा कर गये। उनकी इस धरोहर को सम्भाल कर रखना, उसी राह पर निष्काम भाव से जीवन पर्यन्त कर्मरत रहकर भावी सन्तति के हाथों सुरक्षित सौंपना हमारा एक मात्र पुनीत कर्तव्य है।

●

एक मात्र मार्ग

– मगसिंह लाठी

पूज्य श्री तनसिंह जी रचित एक सहगायन की पंक्ति है– 'जरा सोचो गहरे तो तुम्हीं ना तुम्हारे'। हम हमारे नहीं हैं, तो किसके हैं? हम हैं समाज के। हम समाज के हैं तो हमारे साथ चलने वाले भी समाज के हैं। जब ऐसा भाव सभी का हो तो व्यक्ति त्यागमय बनता है और सब मिलकर एक शक्ति बनती है। लेकिन आज देश दुनियां ने इस भाव को भुला दिया है। इस चिन्तन से जिस राह पर चलना चाहिए उसे भुलाकर व्यक्ति आज ऊबड़-खाबड़ राहों पर चल रहा है। पूरी मानव जाति को जिस राह पर चलना चाहिए, उस राह से भटक गई है।

भटकाव का कारण है स्वधर्म को भूलना। आज तो धर्म की बात करने वाले को भी दकियानूस विचारों वाला या साम्प्रदायिक संज्ञा प्रदान कर दी जाती है। जब हम वस्त्र धारण करते हैं तो शीशे के सामने जाकर देखते हैं कि कैसा दिख रहा हूँ। अर्थात् वस्त्र ऐसे धारण करने का प्रयास रहता है कि जिससे हम अच्छे दिखाई दें। ऐसा ही हमें हमारे आचरण के बारे में सोचना चाहिए कि मेरा जीवन व्यवहार शुद्ध हो। यह तभी होगा जब हम अपने जीवन में पवित्रता को ही उतारें। धर्म की राह अपनाएँ।

आज का वातावरण तो इतना विषमय बन गया है कि भाई भाई से लड़ रहा है, एक जाति दूसरी जाति से लड़ रही है, एक धर्म के अनुयायी दूसरे सम्प्रदाय से लड़ रहे हैं। परस्पर भौतिक साधनों की प्राप्ति के लिए लड़ने में लगे हुए हैं। स्वार्थ में अंधे हो रहे हैं। जरा भी सोचते नहीं कि कितना ही संग्रह कर लें शान्ति नहीं पा सकते। 'त्रस्त-प्राणी वेदना में करुण क्रंदन कर रहे'। चौराहे पर खड़े होकर जैसे प्रकाश का इन्तजार कर रहे हैं, दिशा दर्शक का इन्तजार कर रहे हैं। पर प्रकाश मिल नहीं रहा है, पथ प्रदर्शक कोई दिखता नहीं है, इसलिए सभी की गाड़ियाँ चल रही हैं पर कहाँ जाना है और कहाँ जा रहे हैं, यह पता ही नहीं।

द्वेष, ईर्षा आदि अनेक दुर्गुणों के बंधन में मानव मात्र फंसा हुआ है। इसलिए ईश्वरीय राह की ओर चलना, अर्थात् आत्मा का परमात्मा ही गंतव्य है, यह बात भूले हुए हैं सभी। ऐसे उलझे हुए मानव आज हैं। किन्तु 77 वर्ष पूर्व युग पुरुष पू. तनसिंह जी ने इस स्थिति को भाँप लिया और श्री क्षत्रिय युवक संघ नामक एक सामुहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली समाज को दी। यह वह राह है जो केवल एक जाति के लिए ही नहीं, बल्कि दुनिया को स्व राह, सद् राह पकड़ा सकता है।

इस अंधकार मय सामाजिक संसार में यदि एक मोमबत्ती जितना ही प्रकाश पूज्य श्री की कार्यप्रणाली दे सकी है तो वह भी वर्षो से संचित अंधकार को भगाने में समर्थ है। अंधकार चाहे कितना ही संगठित होकर आये, वह मोमबत्ती जितने प्रकाश से भी वहाँ से भाग जाएगा। पूज्य श्री ने यह नहीं सोचा कि मेरे जीवन काल में ही यह पौधा फलेगा-फूलेगा। उन्होंने तो एक बीज का रोपण किया जिसके पौधे से घोर कलियुग में भी पवित्र रस पाकर आराम से रह पाएंगे। उन्होंने अपने संगठन को आवश्यक खाद, पानी, प्रकाश देकर रोपित किया। कालान्तर में इस वृक्ष से युगों तक लोग मीठे फलों का रसास्वादन करके अपने भूले वैभव को याद कर पुनः भारत को चिन्ता मुक्त करेंगे। यह किसी एक जाति-धर्म को राह दिखाने की प्रवृति नहीं है बल्कि व्यष्टि से समष्टि और परमेष्टि की राह पकड़वाकर अग्रसर करने वाली प्रवृति है। भगवान ने संसार के दुराचारियों का नाश करने यहीं, इस कौम में ही जन्म लिया है। इस महापुरुष ने भी मानव को भौतिकता से दूर कर राष्ट्रीय चिन्तन, शांति, आध्यात्मिकता का मार्ग प्रशस्त किया है। यही भाव है जिसके कारण भारत विश्व गुरु रहा, एक बार पुनः उसी राह पर लाकर वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव व सतयुग का आगाज करेगा। नान्य पंथा-नान्य पंथा। ●

पूज्य श्री तनसिंह जी के कालखण्ड की आध्यात्मिक विभूतियाँ

– कर्नल हिम्मत सिंह

मानव जीवन पूर्व-जन्म में किये गये कर्मों का प्रतिफल अथवा संचित कर्मों का फल। यह दुर्लभ है, दुर्लभ इसलिए कि यह सभी योनियों में श्रेष्ठ है व हर दृष्टि से विलक्षण है। हमारे शास्त्रों में कहा है- ''नरत्वं दुर्लभ लोके।'' मर्यादा पुरषोत्तम भगवान राम ने मनुष्य शरीर की महत्ता बताते हुए कहा है, ''बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन भावा''।

मानव योनि को सर्वश्रेष्ठ इसलिए कहा गया है क्योंकि इस योनि में ही जन्म जन्मांतर से मुक्ति मिल सकती है। मोक्ष प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य है। हमारे अन्दर जो शिव है वही जिंदा तत्त्व जीवन है, जिसको पाना ही मानव जीवन का मूल लक्ष्य है।

सभी संतों, गुरुजनों अथवा महापुरुषों ने अपने-अपने निराले ढंग से सम्पूर्ण जीवात्मा को संबल प्रदान कर, सेवा कर, आश्रय प्रदान कर उनके जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

धर्म पथ-सनातन के इतिहास में हमारी अनेक पीढियों ने देखा और उस समय को जिया जिसमें भारत के समृद्ध इतिहास में अनेक तपस्वियों, साधकों और समाज सुधारकों को स्थान मिला है। हमारे देश में अनेक राजा-राजकुमार हुए जिन्होंने भौतिक सम्पदा को ठोकर मारकर वनखण्ड की राह थामी और समाज का उद्धार किया। इन राजवंशी संतों का भारत के निर्माण में, आध्यात्मिक प्रचुर सम्पदा की बढोतरी में महत्ती योगदान है।

पूज्य तन सिंह जी की मान्यता थी कि समाज के लिए प्रतिभाओं की उपयोगिता ही उनके जीवन की सार्थकता है। उनके कालखण्ड में हमारे समाज में लोक कल्याण हेतु जिन आध्यात्मिक विभूतियों का आविर्भाव हुआ उनका संक्षिप्त परिचय यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

परम पूज्य बाला सतीमाता

संवत् 1960 की भाद्र मास की कृष्ण जन्माष्टमी के दिन ठाकुर लाल सिंह निवासी रूपनगर (बाला) जिला जोधपुर के घर एक दिव्य कन्या ने जन्म लिया जो आगे चलकर सतीमाता रूपकंवर के नाम से प्रसिद्ध हुई।

इनका लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा और संस्कार निर्माण इनके पिताश्री के ज्येष्ठ भ्राता श्री चन्दर सिंह जी के संरक्षण में हुआ।

श्री रूपकंवर का पाणिग्रहण संस्कार श्री जुझार सिंह जी, जो जोधपुर लांसर्स में सवार के पद पर थे-के साथ 10 मई, 1919 को संपन्न हुआ। विधि के विधान को कौन टाल सकता है? 25 मई 1919 को ही इनके पति का देहान्त हो गया।

सती बापजी का वैधव्य हरिनाम के जप, सत्संग और परमार्थ में कटा।

15 फरवरी, 1942 को इनमें सत जागृत हुआ। जन मानस अटूट श्रद्धा के साथ तब से उनको प्राणवान महान संत मानने लगा। 15 फरवरी, 1942 से लेकर 16 नवम्बर, 1986 (अंतकाल) तक उन्होंने अन्न-जल ग्रहण नहीं किया।

परम पूज्य सतीमाता का भक्तमति मीरा बाई के मरू प्रदेश में अवतरण लोगों के कल्याण हेतु हुआ था। 16 नवम्बर, 1986 को जो दिव्य शक्ति सती माता के रूप में अवतरित हुई थी वह पुनः परमात्मा में लीन हो गई।

बाला गाँव अब सतीमाता के मन्दिर, आश्रम और गौशाला के साथ एक अनुपम तीर्थ स्थली के रूप में विद्यमान है।

सत्य सांई बाबा

श्री सत्यनारायण राजू (सांई बाबा) का जन्म 23 नवम्बर, 1926 को पुट्टापार्थी आंध्र प्रदेश में हुआ था। 20 अक्टूबर, 1940 को इन्होंने घोषणा की कि मैं सांई बाबा हूँ।

वे अत्यधिक प्रभावशाली अध्यात्मिक गुरुओं में से एक थे। भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में उनके असंख्य अनुयायी हैं।

सत्य सांई बाबा ने सभी से प्रेम, परोपकार, सेवा और ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा का संदेश दिया। वे सेवा के माध्यम से आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के समर्थक थे। इनके अनुयायी और भक्तगण इनको जन हितैषी, पुनर्जागरणकर्ता, सूक्ष्म दृष्टि वाला, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी मानते हैं।

उन्होंने अपने लेखों और उपदेशों के माध्यम से अध्यात्म, धर्म और सार्थक जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबधित ज्ञान का उपहार मानवता को दिया। इन्होंने अक्सर दोहराया कि पानी का स्वाद चखने के लिए समुद्र के सम्पूर्ण जल को पीना जरूरी नहीं है। वैसे ही सुख, शान्ति और प्रेम भरी जिंदगी जीने के लिए सभी धर्म शास्त्रों का अध्ययन करना भी जरूरी नहीं है। किसी एक सूत्र को पकड़ो और उसके प्रति सच्ची श्रद्धा और विश्वास से अपना जीवन सफल बना लो।

24 अप्रेल, 2011 को 84 वर्ष की आयु में सत्य सांई बाबा का निधन हो गया था।

श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्द जी महाराज

'विश्व गुरु' और 'विश्व गौरव' की दुर्लभ उपाधियों से विभूषित परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज श्री स्वामी परमानन्दजी महाराज (परमहंसजी) अनुसुइया चित्रकूट के शिष्य हैं।

राजस्थान में जोधपुर जिले के अन्तर्गत ओसियाँ निवासी स्व. श्री जब्बर सिंह जी के सुपुत्र (जन्म नाम गुलाब सिंह) के रूप में स्वामीजी का जन्म सन् 1933 में हुआ था।

प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कर आप सेना में भर्ती हो गये। सेना सेवा से समय पूर्व ही मुक्ति पाकर परमसत्य की खोज में निकल पड़े। भटकते हुए चित्रकूट के समीप सती अनुसुइया के बीहड़ जंगलों में मंदाकिनी नदी किनारे अपने गुरु की शरण में पहुँच गये।

पूर्ण लग्न और निष्ठा से की गई वर्षों की घोर साधना एवं सद्गुरु की असीम कृपा और आशीर्वाद से सारे बंधनों से मुक्त हो आप वही हो गये जो सम्पूर्ण संसार का उद्गम और गन्तव्य है। पूरी हुई परमसत्य की शोध और खोज।

इस अवस्था को प्राप्त करने के उपरान्त आपको अनुभव में सद्गुरु ने बताया कि आपकी सभी वृतियाँ शान्त हो गई हैं, केवल एक छोटी-सी वृति शेष है- गीता का भाष्य लेखन। गुरु के इस आदेश का मूर्त रूप है ''यथार्थ गीता''।

वर्तमान में स्वामी जी अपने आश्रम में आसनरत हैं और भूले भटके जन मानस का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

श्री गुरु महाराज प्रेमपाल सिंह रावत

आप एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु हैं और विश्व की सौ चुनिंदा आध्यात्मिक विभूतियों में सम्मिलित हैं। आपका प्रभाव पश्चिमी देशों में अधिक है और आपने अमेरिका की नागरिकता स्वीकार कर ली है।

श्री महाराज जन्म से भारतीय हैं और हरिद्वार उत्तराखण्ड निवासी ख्याति प्राप्त संत श्री गुरु हंस जी महाराज के कनिष्ठ पुत्र हैं।

मात्र तीन वर्ष की उम्र में ही इन्होंने अपने पिताश्री के सान्निध्य में एक धार्मिक सभा को सम्बोधित किया था। जब इनकी उम्र छः वर्ष की हुई तब इनके पिता और

गुरु ने इनको दीक्षित किया और आराधना की विधि सिखलाई।

उनकी मान्यता है कि ईश्वर साकार भी है और निराकार भी। निराकार के रूप में उसकी चेतना और दिव्य ज्योति है। साकार के रूप में सतगुरु है जिसकी कृपा और आशीर्वाद से शाश्वत शान्ति, परमानन्द और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

2001 में इन्होंने रावत फाउण्डेशन की स्थापना की। 2012 में मलेशिया में इनको 'एशिया पैसीफिक ब्राण्ड्स फाउण्डेशन लाइफ टाईम अचीवमेण्ट अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

बाबा दिग्विजय नाथ : महन्त गोरखनाथ मन्दिर गोरखपुर

गोरखनाथ मन्दिर के महन्त दिग्विजयनाथ हिन्दुत्व के पुरोधा और प्रखर राजनेता थे। उन्होंने देश की स्वतंत्रता, धर्म, समाज और सनातन संस्कृति की रक्षा के हेतु अपना सारा जीवन होम कर दिया। बाबाजी ने राम जन्मभूमि आन्दोलन, धर्मान्तरण, अस्पृश्यता और गोरक्षा जैसे मुद्दों पर अनेक आन्दोलनों का सफल नेतृत्व कर न केवल अपनी नेतृत्व क्षमता का लोहा मनवाया बल्कि इस मिथक को तोड़ने में भी सफल रहे कि हिन्दु कभी एकजुट नहीं हो सकता।

आप मेवाड़ के महाराण प्रताप के वंशज थे। रावत उदय सिंह राणावत ठिकाना कांकरवा-उदयपुर के चार पुत्रों में तीसरे पुत्र के रूप में महन्त श्री दिग्विजयनाथ का आविर्भाव (जन्म संवत् 1951 वि. वैशाख पूर्णिमा, जन्म नाम नानू सिंह) हुआ। रावत उदय सिंह ने अपने इस पुत्र को गोरखनाथ मन्दिर को भेंट कर दिया।

गोरखनाथ मन्दिर में योगीराज बाबा गम्भीरनाथजी की देख-रेख में इनका पालन पोषण हुआ तथा शिक्षा-दीक्षा की संतोषजनक व्यवस्था की गई।

संवत् 1989 वि. में बह्मनाथजी महंत पद पर अधिष्ठित हुए। उन्होंने विधिवत यौगिक शिक्षा प्रदान कर दिग्विजयनाथजी को अपना शिष्य बनाया और उनके ब्रह्मलीन होने के उपरान्त बाबा दिग्विजयनाथजी महंत पद पर अधिष्ठित हुए।

संवत् 1992 से 2020 वि. तक वे महन्त पद को सुशोभित करते रहे। उन्होंने प्राचीन गोरखनाथ मन्दिर का पुनः निर्माण कर उसका कायाकल्प करवाया। वे भारतीय शिक्षा जगत के महनीय आचार्य थे। उन्होंने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ट्रस्ट के अन्तर्गत अनेक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना भी करवाई।

अखिल भारतीय अवधूत भेष बारह पंथ नाथ योगी महासभा के गठन का श्रेय भी उनको ही दिया जाता है। वे उसके आजीवन अध्यक्ष भी रहे।

बाबा दिग्विजयनाथ सच्चे अर्थ में हिन्दू थे। हिन्दुओं के प्रति उनके हृदय में अगाध निष्ठा और श्रध्दा थी।

वे आचार्य शंकरजी, समर्थगुरु रामदासजी, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थजी की परम्परा के ही प्राणवान अंग थे।

महंत दिग्विजय नाथ ने ही बाबरी मस्जिद को अपने मूल रूप में मन्दिर में बदलने की कल्पना की थी। 22 दि. 1949 को विवादित ढांचे के भीतर चोरी-छिपे भगवान श्रीराम की प्रतिमा को उन्होंने ही स्थापित की थी।

विनायक दामोदर सावरकर जिनके हाथ में इस आन्दोलन की कमान थी वे भी इस अभियान में बाबा के साथ थे।

23 दिसम्बर, 1949 को सुबह सवेरे पौ फटने से पूर्व ही श्रीरामलल्ला की मूर्ति स्थापना की सूचना जंगल में लगी आग की तरह फैल गई कि भगवान 'राम' प्रकट हो गये हैं। यह सुखद समाचार सुन भक्तगण भाव-विभोर हो उठे और अनायास ही ''भये प्रकट कृपाला'' की स्तुति गाने लगे, उस समय सबसे पहले 'रामलला' की पूजा महन्त दिग्विजयनाथ ने की थी।

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने स्पृहणीय यशस्वी जीवन जीकर 28 सितम्बर, 1969 को 75 वर्ष की आयु में शिवैक्य प्राप्त किया। उनका नाम, उनका कालजयी कृतित्व भारतीय इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

उनके निधन पर तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने अपनी शोक संवेदना प्रकट करते हुए उन्हें महान स्वतंत्रता सेनानी करार दिया। श्री अटलबिहारी बाजपेयी ने भारत निर्माण में उनके योगदान को अहम बताया और कहा कि 1921 के असहयोग आन्दोलन में उन्होंने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में उनका स्थान बहुत ही ऊँचा था।

पीड़ितों के उद्धारक–अघोरेश्वर भगवान राम

महर्षि शुकदेव के बाद, बालपन में ही कठोर साधना का उदाहरण अघोरेश्वर भगवान रामजी का ही मिलता है। अघोरेश्वर अवधूत भगवान राम भारत के प्रसिद्ध चमत्कारी औघड़ संत कीनाराम की शिष्य परम्परा के प्रतिष्ठा प्राप्त औघड़ के रूप में विख्यात हैं।

परम पूज्य अघोरेश्वर भगवान राम का अवतरण कुण्डी ग्राम जिला भोजपुर बिहार के स्व बाबू बैजनाथ सिंह एवं श्रीमती लखराजी देवी के सुपुत्र के रूप में 12 सितम्बर 1937 को हुआ था। बालक के अलौकिक क्रिया–कलापों को देख कर परिवार वालों ने बालक का नाम 'भगवान राम' रखा।

सात वर्ष की उम्र में ही बालक भगवान राम ने घर छोड़ दिया। लगभग 13 वर्ष की अवस्था में अघोर पीठ की, 'कुण्ड' वाराणसी के तत्कालीन पीठाधीश्वर बाबा राजेश्वर राम जी से अघोर दीक्षा प्राप्त की।

सन् 1961 में 24 वर्ष की आयु में ही उन्होंने बाबा भगवान राम ट्रस्ट और सर्वेश्वरी समूह की स्थापना की जिसकी वर्तमान में देश–विदेश में 130 शाखाएँ सकिय हैं।

अघोरेश्वर भगवान राम ने देश काल परिस्थिति के मध्य नजर समाज के सामने ऐसा अनुपम आदर्श प्रस्तुत किया जिससे अब तक समाज में फैली भ्रांतियाँ समाप्त हो गई। अघोर मत व परम्परा को रूढियों से मुक्त कराने और आधुनिक प्रगतिशील स्वरूप देने का श्रेय बीसवीं सदी के अघोर संतों में भगवान अघोरेश्वर राम जी को जाता है।

अघोरेश्वर भगवान राम बाबा किनाराम परम्परा के संत थे। बाबा किनाराम भारतीय संत परम्परा के एक प्रसिद्ध संत और अघोर सम्प्रदाय के अनन्य आचार्य थे। इनका जन्म चंदौली जिले के ग्राम रामगढ में एक कुलीन रघुवंशी क्षत्रिय परिवार में सन् 1601 में हुआ था।

भगवान राम का कहना था कि अपना कुकृत्य ही भूत है, जो सदा मन को पीड़ा पहुंचाता रहता है। भूत की चिंता छोड़ो, भविष्य में उस गलती को न दोहराने का निश्चय करो।

आजीवन गरीबों, शोषितों, पीड़ितों, असहायों, दलितों व कुष्ठ रोगियों की सेवा में तल्लीन अघोरेश्वर भगवान रामजी को 29 नवम्बर, 1992 को अमेरिका में निर्वाण प्राप्त हुआ।

''रमता है सो कौन, घटघट में विराजत है
रमता है सो कौन, बतादे कोई''

बाबा श्री सत्यनारायण दास

वैदिक शास्त्र के ज्ञाता, बाबा श्री सत्यनारायण दास ने प्राचीन ज्ञान को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से 'जीवा इंस्टीट्यूट ऑफ वैदिक स्टडीज' की स्थापना की। वर्तमान में आप इसके निर्देशक भी हैं। जीव गोस्वामी के भक्ति संदर्भ पर लिखे आपके सार गंभीर निबंध अब एक पुस्तक के रूप में उपलब्ध हैं। बाबा ने भारतीय दर्शन और संस्कृति पर 15 पुस्तकों का प्रकाशन करवाया है।

वर्तमान में आप वृंदावन स्थित अपने संस्थान में रह कर अर्जित ज्ञान को दुनियां के अनेक विश्वविद्यालयों में

विजिटिंग प्रोफेसर और सहायक संकाय सदस्य की हैसियत से साझा कर रहे हैं।

समाज कल्याण के क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मानित बाबा को अमेरिका के जीव संस्थान के शास्त्री सम्पादकों के बोर्ड द्वारा प्रकाशित जाने माने लोगों की सूचि में बतौर 'विख्यात पुरुष' दर्शाये जाने का गौरव भी प्राप्त है।

जीव गोस्वामी के तत्व संदर्भ का अनुवाद करने पर सन् 1994 में भारत के राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने आपको सम्मानित किया। कैम्ब्रिज के अन्तर्राष्ट्रीय जीवन अनुसंधान और सलाहकार बोर्ड ने श्री दास को वर्ष 2004 के अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक के सम्मान के लिए चुना था। यह एक बहुत ही दुर्लभ उपलब्धि थी। 2012 में आपको राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य के माध्यम से वैदिक संस्कृति के प्रसार में आपके योगदान के उपलक्ष्य में साहित्य सम्मान प्रदान किया।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के द्वारा आपको एक ट्राफी और प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया था।

बाबाजी श्री सत्यनारायण दास सुपुत्र श्री करम सिंह चौहान पल्ला जिला फरीदाबाद के मूल निवासी है।

गुरुपद संभवरामजी : अघोरपीठ, पड़ाव, वाराणसी के पीठाधीश्वर

नरसिंहगढ-मध्यप्रदेश के पूर्व महाराजा, श्रीमती इन्दिरा गांधी मंत्री मण्डल के सदस्य, दमन एवं दीव और दादरा नगरहवेली के प्रशासक और गोवा के पूर्व राज्यपाल श्री भानुप्रकाश सिंह जी के सुपुत्र महाराज कुमार यशोवर्धन सिंह मात्र 22 वर्ष की उम्र में सन्यास पथ की ओर अग्रसर हो गये।

गंगा किनारे स्थित अघोरपीठ के स्थापक अवधूत भगवान रामजी से दीक्षित हो वे सन्यासी बन गये। औघड़ गुरुपद सम्भव राम का नाम इन्हें गुरुदेव ने ही दिया।

सन् 1992 में गुरु अवधूत भगवान राम जी के देहत्याग के उपरान्त गुरु की वसीयत के अनुसार इन्हें अघोरपीठ पड़ाव, वाराणसी का पीठाधीश्वर घोषित किया गया।

वर्तमान में गुरुपद संभवराम जी पड़ाव स्थित मुख्यालय के अलावा, देशभर में स्थित आश्रमों का कार्य देख रहे हैं। अवधूत भगवान राम जी के चलाये कार्यों, को जिनमें कुष्ठ रोगियों का इलाज एवं आश्रम के 19 सूत्रीय कार्यों का संचालन शामिल है, सुचारू रूप से आगे बढ़ा रहे हैं।

जशपुर में स्थित सोगड़ा आश्रम में चाय का उत्पादन सभी वैज्ञानिकों को चौंकाने वाला और वनवासियों की सेवा का एक अनुकरणीय उदाहरण है।

तन मारा मन बस किया, सोधा सकल शरीर।
काया को कफनी किया, बाको नाम फकीर ।।

महाराज चतुर सिंह जी बावजी

महाराज चतुर सिंह जी बावजी मेवाड़ की भक्ति-परंपरा के महान सन्त कवि हुए हैं। इन्होंने प्राचीन भारतीय ज्ञान को लोकवाणी के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया है।

बावजी का जन्म 9 फरवरी, 1880 को महाराज सूरत सिंह जी के कनिष्ठ पुत्र के रूप में करजाली उदयपुर में हुआ था। इन्होंने राज प्रासादों को त्याग कर एक संत के अनुरूप कुटिया में साधना की। इनकी साधना स्थली वर्तमान में एक तीर्थ के रूप में विकसित हो चुकी है।

संत-कवि पूज्य बावजी ने अपने अद्‌भुत विचारों को साहित्य के द्वारा सुलभ और सरल बनाकर मानव सेवा की है। इन्होंने 21 ग्रंथों की रचना की है। 'गीता पर गंगाजली' उनकी प्रसिद्ध रचना है।

आत्मरूप दिव्यता के पोषक, उद्यत चिंतक, अनुपम सौन्दर्य के उपासक और पूर्णता को प्राप्त बावजी उच्च कोटि के संत थे। महाराज 'चतुर सिंह जी' आप

संत गुमान सिंह जी के शिष्य थे। 01 जुलाई, 1929 को पूज्य बावजी परलोक सिधार गये। शेष हैं उनकी अनुपम साहित्यिक रचनाएँ जो जन मानस का सदैव मार्ग दर्शन करती रहेगी।

महामण्डलेश्वर पायलट बाबा : पीठाधीश्वर नासिक पीठ–महाराष्ट्र

महायोगी पायलट बाबा शिष्य महान संत हरिबाबा भारतीय वायु सेना में विंग कमाण्डर के पद पर सेवा दे चुके हैं। पायलट बाबा का असली नाम विंग कमाण्डर कपिल सिंह है। इनका जन्म बिहार राज्य के सासाराम ग्राम में श्री चंद्रिमा सिंह के पुत्र के रूप में 15 जुलाई, 1938 को हुआ था।

सेवा निवृत्ति के उपरान्त अपने गुरु की शरण में चले गये और दीक्षा प्राप्त कर हिमालय में घोर तपस्या की। ध्यान मग्न और समाधिस्थ होने की कला में निपुण हो आपने अनेक सिद्धियाँ भी हासिल की हैं।

बाबा अब तक 110 बार समाधि ले चुके हैं। योग और ध्यान पर उनका गजब का नियंत्रण है। बाबा की लोकप्रियता विदेशों में बहुत अधिक है।

वर्तमान में साथी शिष्या योगमाता कैइको–आइकावा (KEIKO AIKAWA---) के साथ आप 'विश्व शान्ती मिशन' पर काम कर रहे हैं। स्वदेश में आप 'नारी शिक्षा और सुरक्षा', नदी स्वच्छता और संरक्षण पर अपना ध्यान केन्द्रित किये हुए हैं।

9 मई, 2019 से आप नासिक पीठ के पीठाधीश्वर के पद पर आसीन हैं।

करोना काल में ''पायलट बाबा संस्थान'' द्वारा प्रधानमंत्री केयर फण्ड में एक करोड़ 42 लाख रुपये की राशि अनुदान स्वरूप दी गई थी।

भाऊ कलचूरी : मेहरबाबा के शिष्य

भाऊ कलचूरी जरथुस्त्र, बुद्ध, यिशु और मुहम्मद के समकक्ष, वर्तमान सदी के ईश अवतार, मेहरबाबा के निष्ठावान शिष्य और पूर्ण समर्पित अनुयायी थे। आप एक विद्वान लेखक, कवि और जीवनी लेखक थे। आपका जन्म 13 जनवरी, 1927 को कंटागी–मध्य प्रदेश में हुआ था। आपका पूरा नाम वीर सिंह भीखम सिंह कलचूरी था।

सन् 1952 में संयोग से एक जन सभा में आपने मेहरबाबा के दर्शन किये और बहुत प्रभावित हुए। उसी क्षण में आपके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आया और वे मेहरबाबा के शिष्य बन गये।

मेहरबाबा एक ईरानी मूल के भारतीय चिंतक और दार्शनिक ही नहीं अपितु इस कालखण्ड के अंतिम पूर्णावतार थे।

31 जनवरी, 1969 को बाबा ने मेहराबाद अहमदनगर में शरीर का परित्याग कर दिया था। मेहरबाबा के देहत्याग उपरान्त भाऊ कलचूरी, बाबा की ज्योति को प्रकाशमान बनाये रखने में लगे रहे और बाबा से संबधित साहित्य का प्रकाशन करवाया। वे 'अवतार मेहरबाबा ट्रस्ट' के अध्यक्ष थे।

भाऊ कलचूरी अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए 23 अक्टूबर, 2013 को परम् सिद्धि प्राप्त कर गये।

ममता मधु भी है, मद्य भी। ममता सोने का धागा है पर लोहे की जंजीर से मजबूत और जिन्दा साँप की तरह धीरे–धीरे लपेट लेती है। जो उसे तोड़ सकते हैं वे या तो देवता हैं, महावीर या फिर जानवर। साधारण लोगों को उसकी लपेट में जितना कष्ट है उतना ही आनन्द है।

– ताराशंकर

गतांक से आगे

बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास

– खींवसिंह सुलताना

महाराजा दलपत सिंह

महाराजा रायसिंह ने सूरसिंह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, परन्तु ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण राय सिंह की मृत्यु के बाद दलपत सिंह बीकानेर का शासक बना।

दलपत सिंह का विद्रोह व जहांगीर द्वारा सूर सिंह को बीकानेर का मनसब देना :– दलपत सिंह प्रारम्भ से ही विद्रोही स्वभाव का था। जहांगीर द्वारा जब उसे ठहटा भेजा गया तब दलपत सिंह शाही आज्ञा को ना मानते हुए अपने राज्य बीकानेर चला गया और मुगलों को परेशान करने लगा। तब जहांगीर द्वारा बीकानेर का राज्य सूर सिंह को दे दिया गया व जावदीन खां को एक विशाल सेना देकर सूर सिंह की सहायता के लिए भेजा गया।

दलपत सिंटह की पराजय :– सूर सिंह द्वारा शाही सेना के साथ आने पर दलपत सिंह भी सेना सहित आगे बढ़ा। छापर के निकट हुए युद्ध में दलपत सिंह की विजय हुई व जावदीन खाँ युद्ध मैदान से भाग गया। इस अवसर पर सूर सिंह ने दलपत सिंह के सभी असंतुष्ट सरदारों को अपनी ओर मिला लिया। केवल भटनेर का ठाकुरसी जीवन दासोत दलपत सिंह के पक्ष में रहा। दूसरे दिन युद्ध के दौरान चुरू के ठाकुर भीमसिंह ने धोखे से दलपत सिंह को बन्दी बना लिया।

दलपतसिंह की मृत्यु :– दलपतसिंह को कैद कर अजमेर के आनासागर के पास जहांगीरी महलों में रखा गया जहाँ सौ सैनिक हर वक्त पहरा देते रहते थे। उन्हीं दिनों एक राजपूत युवा चांपावत हाथीसिंह, जो अपने कुछ साथियों के साथ अपनी पत्नी को लेने अपने ससुराल जा रहा था, बन्दी गृह के पास रुका। उसे जब दलपतसिंह के कैद में होने का पता चला तो उसने अपने साथियों सहित पहरे में स्थित सैनिकों पर आक्रमण कर, उन्हें मार कर दलपतसिंह को कैद से छुड़वाया। अजमेर के सुबेदार को जब इसका पता चला तो उसने अपने चार हजार सैनिकों के साथ बढकर उन्हें घेर लिया। फलस्वरूप दलपतसिंह व हाथीसिंह अपने थोड़े से साथियों सहित लड़ते हुए मारे गए।

महाराजा सूरसिंह

सूरसिंह का जन्म वि.सं. 1651 में हुआ था। अपने बड़े भाई दलपतसिंह को परास्त कर सूरसिंह वि.सं. 1670 में बीकानेर के शासक बने।

पिता के साथ विश्वासघात करने वालों को दण्ड देना :– महाराजा रायसिंह के जीवन काल के अंतिम वर्षों में जिन लोगों ने उनके साथ विश्वासघात किया था, महाराजा सूरसिंह ने ऐसे सभी व्यक्तियों को दण्ड दिया। सबसे पहले मंत्री कर्मचन्द्र के पुत्रों लक्ष्मी चन्द्र, भागचन्द्र पर आक्रमण किया गया जो अपने 500 राजपूत सैनिकों के साथ लड़ते हुए मारे गए। उसी वर्ष षड़यंत्र में कर्मचन्द के सहायक रहे पुरोहित मान महेश व बारहठ–चौथ की जागीरें जब्त कर ली गई, तोलियासर के पुरोहितों से पुरोहिताई का हक वापिस ले लिया गया। सारण भरथा को द्रोणपुर के गोपालदास सांगावत के हाथों मरवा दिया । इस प्रकार सभी विश्वासघातियों को दण्ड दिया गया।

सूर सिंह ने विभिन्न अवसरों पर काबुल में, ओरछे पर आक्रमण के समय, खानजहाँ लोदी के विरुद्ध शाही सेना का नेतृत्व किया व विजय प्राप्त की।

सूर सिंह की एक भतीजी का विवाह जैसलमेर के रावल हरराज के पुत्र भीम सिंह के साथ हुआ था। भीम सिंह की मृत्यु के बाद जैसलमेर के सरदारों ने उसके पुत्र को मारने का षड़यंत्र रचा। तब रानी ने अपने चाचा सूर सिंह से अपने पुत्र की रक्षा के लिए सहायता माँगी। सूर सिंह अपने सैनिकों के साथ बीकानेर से रवाना हुए, लाठी गाँव के पास पहुँचने पर उन्हें पता चला कि बालक की हत्या कर दी गई है। जैसलमेर वालों के इस नृशंस कार्य को देखकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि बीकानेर की किसी भी राजकुमारी का विवाह जैसलमेर में नहीं किया जाएगा।

सूर सिंह की मृत्यु :– बुरहानपुर में वि.सं. 1688 में सूर सिंह की सत्यु हुई।

महाराजा कर्ण सिंह

सूरसिंह के ज्येष्ठ पुत्र कर्णसिंह का जन्म वि.सं. 1673 में हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद वि.सं. 1688 में ये बीकानेर के शासक बने।

कर्णसिंह द्वारा शाही सेना का नेतृत्व :– अहमदनगर के मालिक अम्बर के निधन के बाद वहाँ के प्रशासन पर फतहखाँ का दखल बढ गया। प्रारम्भ में वह मुगलों का सहयोगी बना रहा किन्तु बाद में विरोधी बन गया। तब उसके विरुद्ध कर्णसिंह को भेजा गया। शुरुआती संघर्ष के बाद फतहखां भाग गया। इसके बाद कर्ण सिंह को बुन्देलखण्ड में जुझारसिंह बुन्देले के पुत्र विक्रमाजित के विरुद्ध भेजा गया, जिसने वहाँ विद्रोह कर रखा था। कर्णसिंह व माधोसिंह हाड़ा की सेना से परास्त होकर विक्रमाजित वहाँ से चला गया।

नागौर पर आक्रमण :– कर्णसिंह के समय नागौर का शासक जोधपुर के स्वामी गजसिंह का पुत्र अमरसिंह था। जोधपुर-बीकानेर की सीमा पर स्थित जारखांणिया गाँव को लेकर दोनों राज्यों में विवाद था। नागौर ने जब जाखांणिया गाँव पर अधिकार कर लिया, तब कर्णसिंह ने महाजन, भूकरका व सीधमुख के सरदारों को साथ लेकर नागौर पर आक्रमण किया। नागौर के शासक अमरसिंह की अनुपस्थिति में केसरीसिंह ससैन्य जाखांणिया गाँव आया। युद्ध में नागौर की पराजय हुई।

कर्णसिंह की पूगल पर चढाई व उसका बटवारा :– कर्ण सिंह के शासनकाल में पूगल का राव राव सुदर्शन भाटी विद्रोही हो गया। कर्ण सिंह द्वारा पूगल पर चढाई की गई, गढ़ पर बीकानेर की सेना का एक मास एक घेरा रहा। एक दिन रात्रि को सुदर्शन भाटी गढ़ छोडकर चला गया और बीकानेर की सेना का गढ़ पर अधिकार हो गया। शेखा के वंशजों द्वारा बंटवारे के आग्रह पर कर्णसिंह ने शेखा के ज्येष्ठ पुत्र हरा के वंशज को पूगल तथा 252 गाँव, दूसरे पुत्र केवान के पुत्रों के वंशजों में से एक को भीखमपुर व 84 गाँव व दूसरे को बरसलपुर व 41 गाँव तथा तीसरे पुत्र बाघा के वंशज को रायमलवाली तथा 184 गाँव दिए ।

कर्ण सिंह को 'जय जंगलधर बादशाह' की उपाधि मिलना :– भारत में हुए लगभग सभी मुस्लिम शासकों की इच्छा भारत को इस्लामिक देश बनाने की थी। औरंगजेब सबसे कट्टर मुस्लिम शासक था। वह जानता था कि जब तक राजपूत शासक हैं तब तक भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाना नामुमकिन है इसलिए उसने एक षड़यंत्र रचा। उसने सभी राजपूत शासकों को साथ लेकर ईरान की ओर आक्रमण के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में अटक के किनारे डेरे हुए। वहाँ पर मुगल खेमे में हो रही हलचलों से राजपूत शासकों को सन्देह हुआ, तब उन्होंने सलाह कर कर्ण सिंह के साथ गए साहबे के सैयद फकीर को मुगल खेमे में भेजा। वहाँ उसको अस्त खां से सारा भेद पता चला तो उसने पूरी सूचना कर्ण सिंह तक पहुँचाई, कि बादशाह आप सभी राजपूत शासकों को एक साथ मुस्लिम बनाने या मारने के लिए यहाँ लेकर आया है। **(शेष पृष्ठ 30 पर)**

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

भक्त राव गोपालसिंह

भक्ति और रजपूती का अभिन्न सम्बन्ध रहा है। मौत से टकराने वाला राजपूत भगवान शालिग्राम को सिरस्त्राण (पगड़ी) में रखकर युद्धों में उतरता था। ईश्वर में आस्था ही वीर का असली धर्म होता है। राव गोपालसिंह जैसे वीर थे, वैसे ही भगवद्-भक्त भी थे। कर्मयोग और भक्तियोग दोनों की ही उन्होंने साधना की थी। जीवन के अन्तिम वर्षों में संसार के सभी अन्य प्रपंचों को त्याग कर वे भगवद्-आराधना में लीन हो चुके थे। कुरुक्षेत्र के युद्ध में गीता के अमर संदेश के उद्घोषक और युद्ध में प्रलयंकर बने भीष्म पितामह पर रथ चक्र उठाने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण का लोकाभिराम रूप उनके मनमन्दिर में स्थापित हो चुका था। भगवद् कृपा, पूर्व जन्म के संस्कार और अविरल एकाग्र अभ्यास ने उनकी चित्तवृतियों को ध्यान की पूर्णावस्था, तक पहुँचा दिया था। दिन में अनेक बार पढ़ते अथवा बातें करते-करते अचानक ही वे ध्यान लीन हो जाते थे। यह उनका दैनिक कार्यक्रम-सा बन गया था। यों वे दिन में तीन बार आसन लगाकर ध्यान में बैठते थे। उस समय नेत्र बन्द किए उनके मुख-मण्डल पर मुस्कान की रेखा प्रस्फुटित हो जाती थी। मानो वे भगवान का रूप देखते हुए आनन्दातिरेक से गद्गद् हो रहे हैं। उन वर्षों में उनके अध्ययन के विषय थे- भक्तियोग और कर्मयोग। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और योगीराज अरविन्द घोष के ग्रंथों के अवलोकन में ही उनका अधिकांश पठनकाल व्यतीत होता था। उनके जीवन का चरम लक्ष्य रजपूती और भक्ति का समन्वय व उपार्जन ही था। क्षात्रधर्म के कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलते हुए भक्ति का प्रयोग करना और ईश्वर की अनन्य शरण में चला जाना ही गीता प्रतिपादित कर्मयोग है। इसी को राजयोग कहते हैं। राव गोपालसिंह द्वारा रचित इस दोहे से उनके विचारों की अभिव्यक्ति पूर्णरूपेण प्रकट होती है-

तव चरण चित रू देशहित, उर साहस असि हाथ।
क्षात्र धर्म मत भक्ति पथ, अचल देहु यदुनाथ।।

उक्त स्वरचित दोहा ही उनके लिए श्रुति वाक्य था। रजपूती और भक्ति ही क्षत्रिय के लिए अन्तिम श्रेयस्कर साध्य मार्ग है।

महाप्रयाण

जीवन के अन्तिम दिनों में वे रुग्ण रहने लगे थे। हृदय की धड़कन, पेट की खराबी और स्नायविक दुर्बलता उन्हें सताने लगी। सन् 1939 ई (वि.स. 1995 के माघ मास) में उनके पेट में पीड़ा उठी। चिकित्सा हेतु वे अजमेर आये और जयपुर रोड़ स्थित किशनगढ़ महाराजा की कोठी में ठहरे। अजमेर के लब्ध प्रतिष्ठित डॉक्टर अम्बालाल उनके पारिवारिक चिकित्सक थे। उन्होंने राव साहब के शरीर का डॉक्टरी परीक्षण किया और कराया। उनकी आँतों में कैन्सर के लक्षण पाए गये। लगातार भूमि को शैय्या बनाकर उस भीषण रोग से संघर्ष करते रहे और अन्त में वि.सं. 1995 में चैत्र कृष्णा सप्तमी (12 मार्च, 1939) को इस युग के उस महामानव ने परलोक गमन किया।

उनकी मृत्यु योगीराजों के लिए ईर्ष्या का विषय थी। उनकी मृत्यु क्या थी? भगवद्भक्ति का सचेतन इन्द्रियों और मन बुद्धि के साथ बैकुण्ठ प्रयाण था। इस कथन में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। इन पंक्तियों का लेखक भी उक्त महाप्रयाण के प्रत्यक्षदर्शी के रूप में वहाँ विद्यमान था।

उनकी मृत्यु दिन के ठीक 3 बजे हुई। उस समय उनके शयन-कक्ष वाले विशाल हॉल में डॉ. अम्बालाल के अतिरिक्त राव साहब के पुत्र कुंवर गणपतसिंह, उनके पौत्र भंवर केशवसेन, रायपुर (मारवाड़) के ठाकुर गोविन्दसिंह, देवलिया कलां के राव विजयसिंह, उनके दीवान नाथू सिंह (जो खरवा में रहकर शिक्षित बने थे), गजसिंह जामोला (मसूदा) एवं पुरोहित मोड़ सिंह वहाँ उपस्थित थे। अजमेर से उनका पार्थिव शरीर उसी समय खरवा ले जाया गया और हजारों लोगों की उपस्थिति में शक्ति सागर तालाब की पाल पर जहाँ खरवा के शासकों का (देवकुल) शमशान है, उनके दाह संस्कार की क्रिया सम्पन्न हुई।

शक्ति सागर तालाब की पाल पर राव गोपालसिंह के दाह स्थान पर उनकी समाधि के रूप में एक छत्री निर्मित है, जिसका निर्माण उनकी धर्मपत्नी राणी छत्रपाल कुमारी गौड़जी ने वि.स. 1997 में कराया था। राव गोपालसिंह की समाधि पर प्रतिवर्ष उनकी पुण्य तिथि चैत्र कृष्णा सप्तमी के दिन खरवा तथा आस-पास के गाँवों के हजारों नर-नारी, बालक वृद्ध इकट्ठे होते हैं, मेला लगता है-बालकों के जात-जड़ूले चढ़ाये जाते हैं। स्थानीय लोग उन्हें प्रत्यक्ष फल दाता लोकदेवता मानकर पूजते हैं। खरवा के प्रबुद्ध ग्रामवासी उसी दिन गोपाल-निर्वाण दिवस सोल्लास उसी स्थान पर मनाकर राव साहब को याद करते हैं। देश पर कुर्बान होने वालों की यादें इसी भाँति मनाई जाती है।

प्रसिद्ध पत्रकार व इतिहासकार स्व. झाबरमल शर्मा जसरापुर (खेतड़ी) में कल्याण के ''गीता तत्त्वाक'' में एक भक्त के महान प्रस्थान का चमत्कारिक दृश्य शीर्षक लेख प्रकाशित कराया था जिसका उल्लेख आगे है।

राव गोपाल सिंह का व्यक्तित्व

राव गोपालसिंह का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा सम्पना था। यद्यपि उनकी शिक्षा-दीक्षा उच्चस्तरीय शिक्षण स्तर तक नहीं पहुँच पाई थी। मेयो कॉलेज की पढ़ाई उन्होंने आठ वर्ष बाद ही छोड़ दी थी। घर पर उन्होंने संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा सुयोग्य पण्डित द्वारा प्राप्त की थी। किसी स्कूल, कॉलेज या उच्च शैक्षणिक संस्था में प्रवेश लेकर उन्होंने शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। फिर भी अंग्रेजी लिखित, उच्च कोटि की पुस्तकें जिनमें इतिहास वेदान्त और राजनीति के गहन विषय निबद्ध होते थे, वे बड़ी आसानी से पढ़ते और समझ लेते थे। अंग्रेजी में धारा प्रवाह बोलकर वे अपने भावों को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते थे। हिन्दी पत्रों में प्रकाशित उनके लेखों और सभा-मंचों पर दिए गए उनके भाषणों से ज्ञात होता है कि हिन्दी भाषा पर उनका अच्छा अधिकार था। संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ रामायण, महाभारत, गीता आदि में वर्णित गहन विषयों की उन्हें अच्छी जानकारी थी। इतिहास विषयक उनका ज्ञान इतना बढ़ा-चढ़ा था कि राजस्थान से इतर गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के क्षत्रिय वंशों के संदर्भ में वे एक विशेषज्ञ की भाँति बोलते थे। खनिज धातुओं के संदर्भ में भी उनका अध्ययन था। उनका व्यक्तित्व Self Made था। विविध विद्याओं व गहन विषयों का ज्ञान उन्हें किसी ने सिखलाया नहीं था। किन्तु उन्होंने अपनी जन्मजात प्रतिभा एवं पूर्व जन्म के संस्कारों से स्वयं अर्जित किया था। उन्हें किसी ने महान् बनाने का प्रयत्न नहीं किया, किन्तु वे अपने महान् कार्यो से ही महान् बन गए थे।

उस समय की राजनीति में उनका उल्लेखनीय स्थान था। वे उस काल के राजनीतिक रंगमंच के प्रमुख पात्रों में से एक थे। उस काल के जिन क्रान्ति नेताओं का इतिहास में नाम मिलता है, उनमें गोपालसिंह खरवा का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। उन्होंने अपने राजपूती साहस और शौर्य से प्रेरित होकर उस विप्लवकारी समय में एक ऐसा उल्लेखनीय कार्य कर

बताया, जो अनेक शताब्दियों तक काल के थपेड़े सहता हुआ भी अमिट बगा रहेगा। देश भक्ति और त्याग के कार्य में देश के अन्य क्रान्तिकारी नेताओं में वे अग्रणी थे। देश की स्वतन्त्रता हेतु किए गए क्रान्ति संघर्ष की सजा के रूप में अंग्रेजों ने उनकी पैतृक जागीर जब्त कर ली थी। उन्हें जेल की सजा दी गई। नजरबंदी तोड़कर उन्होंने जंगलों में कठिन जीवन बिताया। अन्त में शक्तिशाली अंग्रेज सेना का सामना करते हुए मरने-मारने को सन्नद्ध होना पड़ा। कूटनीति में चतुर अंग्रेज शासकों ने उन्हें सन्मुख मुकाबले में मृत्यु का वरण करने का मनोवांछित अवसर नहीं दिया। वरना आज इस महावीर का इतिहास और ही तरह से लिखा जाता।

क्षात्रत्व की वे प्रतिमूर्ति थे। क्षात्रधर्म को वे स्वधर्म मानते थे। ''स्वधर्मे-निधनम् श्रेय:'' के गीतोक्त वाक्य के मर्म को उन्होंने खूब समझ रखा था। क्षात्र-धर्म के तेज, वीरता, निडरता, साहस, परित्राण, दया, क्षमा, औदार्य आदि गुणों का उनमें अद्‌भुत सम्मिश्रण था। अहिंसा और हिंसा के भेद को उन्होंने सूक्ष्मता से समझ रखा था। अन्याय और उत्पीड़न को मिटाने और दुष्ट व अत्याचारियों को नष्ट करने हेतु किया गया कार्य हिंसा नहीं माना जाता है, यह उनकी मान्यता थी। ''परित्राणाय-साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्'' का असली भावार्थ यही है कि सज्जनों की रक्षा करना और अत्याचारियों व दुष्टजनों का विनाश करना ही क्षत्रिय का धर्म है-स्वकर्त्तव्य है। उसमें हिंसा मानना कायरता और नपुंसकता का घोतक है।

अश्व संचालन, शस्त्र संचालन एवं जंगलों में एकाकी भ्रमण करते रहने जैसे परम्परागत क्षत्रियोचित गुण उनमें विद्यमान थे। सन् 1915 ई. में आयोजित क्रान्ति के समय नसीराबाद सैनिक छावनी पर आक्रमण करने की योजना, टॉडगढ़ की नजरबन्दी तोड़ने का अति साहसिक कार्य, सलेमाबाद मन्दिर में अंग्रेज सेना द्वारा घेरे जाने के समय 500 सैनिकों से अकेले लोहा लेने की तत्परता तथा सुदूर काश्मीर भूमि पर हिन्दू हितों की रक्षार्थ मरने-मारने का व्रत लेकर कूच करना आदि कार्य, उनकी रजपूती के ज्वलंत एवं जीवन्त प्रमाण हैं। यही वे शानदार स्थल थे जहाँ उनकी रजपूती के दर्शन किये जा सकते थे।

वे जैसे वीर पुरुष थे, वैसे ही समर्पित भगवद् भक्त थे। उनके अन्तिम महाप्रयाण का रोमांचक दृश्य जिन लोगों ने स्वनेत्रों से देखा था, वे जान सकते हैं कि उनकी ईश्वर में शरणागति भावना कितनी उच्चावस्था तक पहुँची हुई थी।

राजपूती परम्परा और भारतीय संस्कृति पर उन्हें गर्व था। देशभक्ति और त्याग में वे किसी से कम नहीं थे। उनकी ईश भक्ति और साधु सेवा सराहनीय थी। हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख सभी धर्मों के आचार्यों व मुनियों का वे समान भाव से आदर करते थे। खरवा में चतुर्मास करने वाले जैन मुनियों के उपाश्रय में वे पैदल जाकर दर्शन करते थे। उस कालखण्ड में होने वाले देशी राजाओं में, देश के नेताओं में और विद्वान समाज में वे मान्य नेता थे।

उपर्युक्त विशेषताओं के साथ-साथ उनमें कुछ कमियाँ भी थी जो ऐसे असाधारण पुरुषों में प्रायः पाई जाती हैं। वे मितव्ययी नहीं थे। उन्होंने सदैव अपनी आय से अधिक खर्च किया। जिससे उनको कर्जदार बनना पड़ा और जब तक ठिकाने पर उनका अधिकार बना रहा, ठिकाना लाखों रुपयों का कर्जदार बना दिया गया था। उन्होंने साधु-महात्माओं, कवि-कोविदों और अभावग्रस्तों को औदार्य भाव के साथ आर्थिक मदद दी। कल का खर्च कैसे चलेगा-उस ओर उनका ध्यान कभी नहीं गया।

समय के कभी वे पाबन्द नहीं रहे। सभास्थलों पर वे सदैव देर से पहुँचते थे। उपस्थित जनसमूह को उनकी

प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। रेल्वे स्टेशन पर वे कभी समय पर नहीं पहुँचते थे। उनके ठीक समय पर न पहुँचने के कारण रेल छूट जाने पर रेलडिब्बों में रखा सामान अनेक बार रेल से प्लेटफार्म पर उतारना पड़ता था अथवा स्टेशन मास्टर और रेलवे गार्ड से अनुरोध कर गाड़ी रुकवानी पड़ती थी।

अपनी मनेच्छा के विपरीत तथ्य को मानने के लिए वे कभी तैयार नहीं होते थे। स्वभाव में जिद्द और हठ भरा हुआ था।

साधु सन्तों के प्रभाव में बहुत जल्दी आ जाते थे, चाहे वह साधु ढोंगी ही क्यों न हो।

परन्तु इन मानवोचित दुर्बलताओं के बावजूद भी वे अपने समय के एक असाधारण पुरुष थे। उनका बाह्य रूप देखकर क्षत्रिय के शरीर की शास्त्रोक्त कल्पना साकार हो जाती है। उस भव्य दर्शनीय शरीर के भीतर क्षत्रियोचित गुणों से अलंकृत लौह-पुरुष विराजमान था।

राव गोपाल सिंह का विवाह संयुक्त प्रान्त के रायबरेली जिले में स्थित शिवगढ़ के राज्य के राजा विश्वेश्वरसिंह की राजकुमारी छत्रपाल कंवर के साथ वि.स. 1947 में सम्पन्न हुआ था। शिवगढ़ संयुक्त प्रान्त में गौड़ राजपूतों का एक समृद्ध एवं प्रतिष्ठित राज्य था। राणी गौड़ जी के गर्भ से चार पुत्र सन्तानें हुई, किन्तु उनमें से तीन शैशवावस्था में ही चल बसीं। कुंवर गणपतसिंह उनकी चतुर्थ संतान थे, जो बाद में खरवा के शासक बनाए गए।

राव गोपालसिंह खरवा का जीवन वृतान्त यद्यपि यहाँ समाप्त हो रहा है, तथापि उस योगी के महाप्रयाण का वह प्रेरक दृश्य चित्रित होना शेष है, जिसको पं. झाबरमल शर्मा ने चित्रित किया है।

चतुर्थ अध्याय इसी अद्‌भुत व अलौकिक दृश्य के वर्णन के साथ आरम्भ होगा।

(क्रमश:)

साभार - **'राव गोपाल सिंह खरवा'**

लेखक - **'सुरजनसिंह झाझड़**

पृष्ठ 26 का शेष

बीकानेर रियासत का संक्षिप्त इतिहास

सभी राजपूत शासकों ने मिलकर योजना बनाई और उसके अनुसार मुगलों को पहले अटक के पार जाने देने में सफलता पाई। इसी समय आमेर से जयसिंह की माताजी के निधन का समाचार पहुँचा, जिससे वे सभी 12 दिन तक इसी किनारे रुके रहे। फिर निश्चय किया कि, अटक पार करने के लिए खड़ी सभी नावों को तोड़ दिया जाए ताकि मुस्लिम सेना अटक पर से आकर उनका पीछा न कर सके। परन्तु सबसे पहले नाव को तोड़कर औरंगजेब का कोपभाजन कौन बनेगा, इसको लेकर सभी के मन में हिचकिचाहट थी। तब कर्णसिंह ने आगे आकर कहा कि पहली नाव मैं तोड़ूंगा। इस पर सभी शासकों ने मिलकर कर्णसिंह को सिंहासन पर बैठाकर उनका तिलक किया और उन्हें-'जय जंगलधर बादशाह' की पदवी दी। फिर सभी नावें तोड़कर सभी शासक अपने-अपने राज्यों में आ गए।

कर्णसिंह की मृत्यु :- दिल्ली लौट कर औरंगजेब ने पहले तो बीकानेर पर आक्रमण का विचार किया, परन्तु बीकानेर की कठिन भोगोलिक परिस्थितियों तथा कर्णसिंह व उनके पुत्रों की वीरता के कारण अपना विचार बदल दिया। उसने कर्णसिंह से मैत्री स्थापित कर कर उन्हें दिल्ली बुलाया और फिर औरंगाबाद के प्रबन्ध के लिए भेज दिया। वहीं वि.स. 1726 में उनकी मृत्यु हो गई।

कर्णसिंह एक वीर, उदार, योग्य शासक थे। वे प्रारम्भ में ही औरंगजेब की कुटिलता को समझ गये। वे स्वयं विद्वान, विद्वानों के आश्रयदाता व विद्यानुरागी थे। उन्होंने स्वयं साहित्य कल्पद्रुम, कर्णभूषण, कर्णसंतोष आदि ग्रन्थ लिखे। **(क्रमश:)**

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

बनगाँव (बिहार)

सरकारी नौकरी की परम्परा

बनगाँव बिहार राज्य के सहरसा जिले का एक पौराणिक गाँव है। कुछ इतिहासकार तो इसे बौद्ध साहित्य में चर्चित 'अपानीगाँव' ही मानते हैं। आबादी और क्षेत्रफल के अनुसार यह एक बड़ा गाँव है।

यह गाँव अपनी प्रतिभाओं के लिये जाना जाता है। मैथिलि ब्राह्मण बाहुल्य गाँव बौद्धिक क्षमता वाला गाँव है। जिसमें बड़ी संख्या में उच्च श्रेणी के अधिकारी, डाक्टर्स, इंजीनियर्स पर्यावरणविद, पत्रकार, लेखक, कलाकार, संगीतकार और अनेक अन्य पेशेवरों को जन्म दिया है।

सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्र में इस गाँव को इसके अतुल्य योगदान के कारण बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

पूज्य संत लक्ष्मीनाथ गोसांई ताउम्र इसी गाँव में रहे। इस गाँव के कुछ हिन्दू अपने नाम के साथ खान भी लगाते हैं। सरकारी नौकरियों में इस गाँव की सफलता के पीछे अनेक कारण हैं जिनमें मुख्य कारण माधोपट्टी की प्रेरणा है जहाँ राजपत्रित अधिकारियों की बहुतायत है, यहाँ सभी श्रेणियों के सरकारी कर्मचारी हैं।

मैथिल ब्राह्मण जन्म-जात से प्रज्ञावान होते हैं और सभी शिक्षित होते हैं। अतः उनका सरकारी नौकरियों में चयन आसानी से हो जाता है।

गाँव में जीवीकोपार्जन का और कोई जरिया नहीं होने से उनका जीवन नौकरी पर ही निर्भर करता है। खेती बाड़ी और मजदूरी ये लोग पहले तो करना नहीं चाहते और दूसरा कृषि के लिए जमीन की अनुपलब्धता।

इनकी मजबूरी का परम्परा में रूपान्तरित होने का मुख्य कारण रहा है, इस समुदाय का आपस में सामंजस्य और भाईचारा। ये जातिगत राजनीति के विष से अभी तक प्रभावित नहीं हुए हैं। एक दूसरे को मदद करने, मार्ग दर्शन करने के लिए ये सदैव तत्पर रहते हैं। मदद भी बिना मांगे और पूर्ण सहृदयता से करते हैं। इनके बीच में परिवारिक सम्बन्ध है और ये पूर्ण निष्ठा से इनको निभाते हैं।

प्रकृति के प्रकोप से भी यह गाँव सुरक्षित है। गाँव की भौगोलिक स्थिति कुछ इस प्रकार की है कि जब भी कोसी नदी में बाढ़ आती है तो यह गाँव अप्रभावित ही रहता है। इस प्रकार कुदरत का भी इनके विकास में पूर्ण योगदान है।

बहुचरा (प्रतापगढ़ उ. प्र.)

सरकारी कर्मचारी

प्रतापगढ जिला मुख्यालय से 24 किमी. उत्तर-पश्चिम दिशा में सई और लोनी नदी के बीच बसा हुआ है बहुचरा गाँव। इलाके के लोग इसे अफसरों वाला गांव कहते हैं। इस गाँव के हर दूसरे घर से एक व्यक्ति किसी उच्च पद पर है। इस गाँव का प्राथमिक विद्यालय भी यहाँ के छात्रों की उपलब्धि का एक अहम हिस्सा है। प्राथमिक विद्यालय का नाम है जबरिया अनिवार्य प्राथमिक विद्यालय। स्कूल का नाम अपने आप में एक प्रेरणा है।

सन् 1919 में इस गाँव के 25 सैनिकों ने प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया था। युद्ध की समाप्ति पर जब वे सैनिक लौटे तो ब्रिटिश सरकार की तरफ से उन्हें ईनाम देने का प्रस्ताव आया। सैनिकों ने कहा कि इनाम की राशि के एवज में हमारे गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय खुलवा दिया जाय। सरकार ने तब विद्यालय खुलवा दिया। विद्यालय के खुलने पर गाँव वालों ने यह नियम बनाया कि जिसका भी बच्चा पाँच वर्ष का होगा उसका

नाम जबरदस्ती स्कूल में लिखा दिया जायेगा। इसलिए विद्यालय का नाम जबरिया अनिवार्य प्राथमिक विद्यालय पड़ गया।

सन् 1969 में गाँव में महात्मा गांधी इण्टरमीडिएट कॉलेज की स्थापना हुई। 1970 से अच्छे नम्बर लाने वाले विद्यार्थियों की सूची कॉलेज के गेट पर लगाने की परम्परा है। इस सूची में लिखे नामों में से अनेक आई.ए.एस., आई.पी.एस. अधिकारी और डॉक्टर बने ।

लोग बताते हैं कि प्रारम्भ के वर्षों में तो कॉलेज प्रधानाचार्य स्वयं गाँव के बच्चों को घर-घर जाकर सुबह पढ़ने के लिए जगाते थे। अब घर-घर तो कोई नहीं जाता लेकिन बच्चे एक दूसरे को देखकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। स्पर्धा की भावना उनके चित्त में बैठ गई है।

डॉ. यशवंत सिंह, डॉ राजेन्द्र बहादुर सिंह और श्री जगबीर सिंह भी इसी गाँव के बासिंदे हैं। श्री जगबीर सिंह कॉलेज और आर्किटेक्ट लखनऊ के प्रधानाचार्य और उत्तर प्रदेश प्राविधिक विश्वविद्यालय के आर्किटेक्ट विभाग के संकायाध्यक्ष रह चुके है। उनके पुत्र अतुल कुमार सिंह पुलिस में सेवारत हैं। उन्हें 2013 में राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। सन् 1914 में इस गाँव से एक साथ 11 लड़कों का चयन सब इंस्पेक्टर के पद पर हुआ था।

हरित नगरी (राजस्थान)

पर्यावरण संरक्षण और वृक्षारोपण की बात हो और मरुनगरी को हरित नगरी में तब्दील करने वाले प्रकृति-प्रेमी श्री श्यामसुंदर का जिक्र नहीं किया जाए, यह असंभव है। श्री श्यामसुन्दर राजस्थान के बीकानेर में राजकीय डूंगर कॉलेज में समाजशास्त्र के प्रोफेसर हैं। उन्होंने अब तक 2,620 गाँवों के 2,60,000 परिवारों से जुड़कर लगभग 7,40,000 पेड़ लगवा दिए हैं। उनके द्वारा शुरू की गई नायाब पहल पारिवारिक वानिकी के चर्चे देश भर में प्रचलित हैं और बहुत से परिवार इसे अपना रहे हैं।

''पारिवारिक वानिकी'' एक संकल्पना है जिसके तहत प्रत्येक परिवार को अपने घर से कम से कम एक पेड़ लगाना चाहिए और उसे अपने परिवार के सदस्य की तरह समझना चाहिए।

श्याम सुंदर का उद्देश्य पेड़ों को ना केवल लोगों के घरों में बल्कि दिलों और विचारों में जगह दिलाना है। हर कोई पेड़ों को अपने जीवन का अहम हिस्सा बनाये इसके लिए लोगों की मानिकसता में भी इसकी जगह होनी चाहिए। जैसे बच्चे के जन्म की खुशी में भी उनके नामकरण पर पेड़ लगाये जाएँ।

उन्होंने कहा है, शादी में जिस तरह सातवचन दुल्हा दुल्हन लेते हैं और उन्हें जीवन भर निभाने का वादा करते हैं। वैसे ही हमने लोगों से अपील की कि वे सात वचनों के अलावा एक आठवां महावचन भी लें जिसे हम हरित वचन कहेंगे कि वह दम्पत्ती अपनी शादी पर एक पौधा जरूर लगायेगा और अन्य किसी दम्पत्ती को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करेगा।

बख्तावरपुरा (स्वच्छ गाँव)

दिल्ली झुंझनु मार्ग पर, झुंझनु से करीब 20 किलोमीटर पहले पड़ने वाला एक गाँव, यहाँ की साफ सफाई, चमचमाती हुई सड़क, बरबस ही यहाँ से गुजरने वालों का ध्यान अपनी ओर खींचती हैं। रास्ते में एक बोर्ड लगा है जिस पर लिखा है 'मुस्कराइए कि आप राजस्थान के गौरव बख्तावरपुरा गाँव से गुजर रहे हैं।' रुककर गाँव वालों से बात करते हैं तो पता चलता है कि इस गाँव में आज पानी की एक बूंद भी सड़क पर या नाली में व्यर्थ नहीं बहती। हर घर से निकलने वाले पानी की एक एक बूंद जमीन में रिचार्ज कर दी जाती है।

ग्राम सरपंच महेन्द्र कटेवा बताते हैं कि गाँव की जरूरत के लिए हर रोज साढ़े चार लाख लीटर पानी जमीन से निकाला जाता है लेकिन इसमें से करीब 95 फीसदी वापस उसी दिन रिचार्ज कर लिया जाता है।

पानी की कमी से झूझ रहे राजस्थान के गाँवों के लिए यह एक बड़ी घटना है। इसके लिए लगभग हर दो-तीन घरों के सामने सड़क के नीचे पानी को जमीन में रिचार्ज करने वाली सोख्ता कुईयाँ बना दी है। गाँव में कई बड़े कुए बने हैं जहाँ बारिश के पानी की एक-एक बूंद इकट्ठा की जाती है।

करीब 10 साल पहले तक यहाँ गाँव के अंदर की सड़कों पर ही नहीं मुख्य सडक पर भी घरों से निकलने वाला पानी भरा रहता था और हर वक्त कीचड़ बना रहता था। सरपंच महेन्द्र कटेवा और कुछ अन्य लोगों ने मिलकर अपने घर का पानी जमीन में रिचार्ज करना शुरू किया। इसके लिए घर के सामने, सड़कों के नीचे 30 फीट गहरी और तीन फीट चौड़ी कुई बनाकर उसको ऊपर से बंद कर दिया गया। इसमें उन्हें तो सफलता मिली लेकिन गाँव के बाकी लोगों ने इसमें जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। और चार पांच घरों का पानी रुकने से कीचड़ की स्थिति पर कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था। तब सरपंच ने ग्राम सभा की बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा की। इसके फायदे सुनकर गाँव के कुछ और लोगों ने भी मिलकर अपने घरों के सामने ऐसे ही सोखता पिट बनवा लिए। इससे सरपंच को लगा कि जो बात गाँव वालों को अलग-अलग नहीं समझाई जा सकती वह एक साथ बैठक में समझाई जा सकती है। इसके बाद तो गाँव में हर महीने करीब-करीब दो ग्राम सभाएँ होने लगी। कानूनन राजस्थान में हर महीने की 5 व 20 तारीख को पंचायत सदस्यों की बैठक होनी जरूरी है। लेकिन ये बैठकें अगर कहीं होती भी हैं तो पंचायत सदस्यों के ही लिए है। परन्तु बख्तावरपुरा में इसमें गाँव के लोगों को बुलाया जाने लगा। और धीरे-धीरे गाँव में महीने में दो बैठक होने लगी जहाँ गाँव वाले एक निश्चित तारीख को अपनी बात रख सकते हैं, पूछ सकते हैं।

इन बैठकों से गाँव के विकास का रास्ता निकला। धीरे-धीरे पूरा गाँव ना सिर्फ कीचड़मुक्त हो गया है बल्कि लोग साफ सफाई भी रखने लगे हैं। इसका फायदा यह हुआ कि गाँव में अब मच्छर नहीं हैं। मच्छर न होने से बीमारियाँ कम हो गई हैं। कटेवा बताते हैं कि इन बैठकों में लिए गए फैसलों को लोग अपने धर्म की तरह मानते हैं। अगर निर्णय सामूहिक नहीं होते तो यह काम नहीं होते और अगर काम कोई कर भी लेता तो फेल हो जाता। आज पूरे वाटर रिचार्ज सिस्टम में कहीं कोई गड़बड़ी आती है तो गाँव का हर व्यक्ति यह सोच रखता है कि इसे तुरन्त मिल जुलकर ठीक कर देना चाहिए और उसे ठीक कर दिया जाता है।

साफ सफाई के रूप में मिली स्फलता ने गाँव वालों को अपने गाँव से जोड़ दिया। इसके बाद एक उदाहरण गाँव में मेन रोड़ पर बना बस स्टैण्ड है। इसमें पंखे लगे हैं, पीने के पानी की व्यवस्था है, इस बस स्टैण्ड का विषय ही नहीं डिजाइन तक भी गांव के लोगों की बैठक में तय हुआ है। सरकार की योजना में इसके रंग रोगन के लिए चूना-पुताई के पैसे आते हैं लेकिन गाँव वालों ने तय किया कि इसे हम अच्छे पेंट से रंग करेंगे। इस पर अधिकारियों को आपत्ति हुई तो गाँव वालों ने उनकी एक ना चलने दी और आज इस बस स्टैण्ड की सुन्दरता यहाँ से गुजरते लोगों को अहसास कराती है कि वे किसी खास गाँव से गुजर रहे हैं।

इसी सड़क पर रात को रोशनी के लिए सोलर लाईट्स लगाई गई हैं। महेन्द्र सिंह कटेवा का कहना है कि, ये सोलर लाईट्स गाँव वालों ने ही स्थान तय करके लगवाई हैं और आज इनकी बैटरियों, बल्बों की रक्षा के लिए खुद गाँव वाले आते जाते सतर्क रहते हैं। अगर ये बिना ग्राम सभा में बातचीत के लगा दी गई होती तो इनका नामो निशान भी नहीं होता। और इनका एक मंत्र है, सरपंच का यह मानना कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है। ग्राम सभा की बैठकों में लोगों की बात सुनी जाती है और इस पर अमल होता है। इसका फायदा यह हुआ कि गाँव के विकास के लिये किए जाने वाले हर काम को लोग अपना काम मानते हैं। **(क्रमशः)**

अपनी बात

संघशक्ति पत्रिका का प्रकाशन पत्रिका को डाक में डालने के 10-12 दिन पहले ही हो जाता है। इसलिए पूज्य तनसिंह जी की जयन्ती के समाचार तथा जन्म शताब्दी वर्ष समारोह के समापन कार्यक्रम के समाचार इस अंक में प्रकाशित नहीं हो सके। यह अंक पाठकों तक पहुँचेगा तब तक 25 जनवरी को अनेक, स्थानों पर पूज्यश्री की जयन्ती उत्साह पूर्वक मनाई जा चुकेगी। 25 जनवरी, 2023 से पूज्य तनासिंह जी के जन्म का सौवां वर्ष प्रारम्भ हुआ। इस दिन से प्रारम्भ जन्म शताब्दी वर्ष को **'जन्म शताब्दी वर्ष समारोह'** मानकर समारोह पूर्वक मनाने का निर्णय लिया गया। इस निर्णय के अनुसार वर्ष भर तक समारोह चलते रहे। कई नई-नई जगह सम्पर्क करके भी कार्यक्रम किए गये जिनमें पूज्य तनसिंहजी का जीवन परिचय तथा उनके द्वारा स्थापित श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया गया। ये सभी कार्यक्रम जन्म शताब्दी वर्ष समारोह के अंग थे। गाँवों में छोटे तथा अन्य स्थानों पर बड़े कार्यक्रम हुए। इस शताब्दी समारोह के समापन का स्थान दिल्ली रखा गया जहाँ देश के हर प्रदेश के लोग रहते हैं और उनमें क्षत्रिय समाज के लोग भी बहुत हैं। इतना ही नहीं दिल्ली के चारों ओर हरियाणा व उत्तरप्रदेश के बड़े-बड़े ऐसे गाँव हैं जहाँ बहुसंख्यक क्षत्रिय समाज के लोगों का निवास है। पूज्य तनसिंह जी के आदर्श जीवन तथा उनकी कृति श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात उन सभी तक भी पहुँचाई जाए, यह भी कारण था दिल्ली में समापन समारोह रखने का। हरियाणा व उत्तर प्रदेश के इन गाँवों में सूचनाएँ प्रसारित करने के लिए छोटे-छोटे दल बनाकर स्वयंसेवक पहुँचे और 28 जनवरी को इस समारोह में पहुँचने के लिए आमन्त्रित किया। संदेश यात्रा निकाली गई।

जन्म शताब्दी वर्ष समारोह का समापन हो चुका। पर जो पूज्य तनसिंहजी ने हमें दिया उसके समापन का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। एक बीज को माली बोता है, प्रेम करता है, पानी डालता है, खाद डालता है, बाड़ लगाता है, पूजा करता है कि कोई जानवर खा न जाए। फिर धीरे-धीरे उसमें अंकुर आता है, पत्ते आते हैं, डालियाँ पनपती हैं, फूल आते हैं और फल लगते हैं। जो बीज के लिए माली करता है वही हमें उसके लिए करना है जो पूज्यश्री ने हमें दिया है। पूज्यश्री ने जो भाव रूपी बीज हमारे अन्दर डाला है, उसको बताई गई साधना के अनुसार पानी, खाद तो देना ही है, उसकी रक्षा के लिए आत्मचिन्तन व सजगता के साथ कार्यरत रहना है। इस प्रकार के लगाव से बढ़ते रहें तो पूज्यश्री द्वारा बताई गई आदर्श स्वयंसेवक की स्थिति को हम प्राप्त कर लें, इतना ही नहीं, यह साधना मार्ग तो जीवन के उद्देश्य परम तत्व की प्राप्ति रूपी फल भी देने में सक्षम है। इसलिए साधक के रूप में इस साधना मार्ग पर बढ़ते रहना है।

पूज्य ततसिंहजी ने समय की आवश्यकता को समझकर श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में एक बीज समाज भूमि में डाला। क्षत्रिय समाज अपने क्षात्रत्व जीवन से भटका हुआ था। समाज को अपना कर्तव्य याद दिलाया जाए और उसी प्रकार का उसका जीवन बने, यह समय की आवश्यकता थी। वातावरण बिल्कुल विपरीत था। ऐसे में ऐसा आदर्श कार्य प्रारम्भ किया गया तो बाधाएँ, विरोध तो तैयार ही खड़े थे। परन्तु इस बीज को विचार दर्शन से समृद्ध किया, भावदर्शन से मूल कार्य को पोषित किया और बराबर मार्गदर्शन किया। ऐसी पोष्टिक खाद से, पानी से, अंकुर फूटे, पत्ते आए, टहनियाँ पनपी और श्री क्षत्रिय युवक संघ निरंतर विस्तारित होता जा रहा है। ऐसा मार्ग जो समाज को दिया, उस साधना का लाभ समाज के सभी लोगों को मिले, यह पूज्य श्री द्वारा स्थापित इस संघ के प्रति हमारा उत्तरदायित्व है। अत: अपनी स्वयं की साधना के साथ इस लोक संग्रह की प्रक्रिया को भी निरन्तर चलाते रहना है। ●

''पूज्य श्री तनसिंह जी''

''कौम के अरमान
मुझमें बोलते हैं।''

2023 - 2024

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष

जन्म शताब्दी समारोह

की हार्दिक शुभकामनाएं

करण सिंह

सदस्य (राजभाषा विभाग)
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

पूज्य श्री तनसिंह जी
जन्म शताब्दी समारोह
की हार्दिक शुभकामनाएं

Vision Comfort Line+ Mattress

Onkar Singh Shekhawat

HARSH CORPORATIONS
68 Giriraj Nagar, Govindpura,
Kalwar Road,
Jaipur +91 97173 59655

पूज्य श्री तनसिंह जी
जन्म शताब्दी समारोह
की हार्दिक शुभकामनाएं

आनन्द सिंह बामणा
अजित सिंह राजनोता
जयपाल सिंह मांडोता
सुनील सिंह बड़नगर
गजेंद्र सिंह बड़वाली
गोविंद सिंह मिदियान

फरवरी, सन् 2024
वर्ष : 61, अंक : 02

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्..
....
....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह